प्रकाशक
आगरा विश्वविद्यालय
हिन्दी विद्यापीठ
आगरा।

मुद्रक—
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस आगरा।

प्रथमावृत्ति १]

सितम्बर १९५६

[मूल्य

हिन्दी-धातु संग्रह

डा० हॉर्नली

प्रकाशक
आगरा विश्वविद्यालय
हिन्दी विद्यापीठ
आगरा।

मुद्रक—
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस आगरा।

प्रथमावृत्ति १] दिसम्बर १९५९ [मूल्य

डॉ० हॉर्नली

[सन् १८४१--१९१८]

डॉ० ए० एफ० रुडोल्फ हॉर्नली एम० ए०, पी. एच० डी ने अपने कार्यकाल का प्रारम्भ जयनारायण मिशनरी कालेज बनारस में प्राध्यापक के पद से किया। "गोडियन भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण" पुस्तक ने विद्वत् समाज को आपकी ओर आकर्षित कर दिया। इस पुस्तक में आपने उत्तरी भारत की भाषाएँ ली हैं। तत्पश्चात् आप कलकत्ते में मिशन कालेज में प्राध्यापक हुए और इस प्रकार आपका सम्बन्ध रॉयल एशियाटिक सोसाइटी अव बंगाल से स्थापित हुआ। समय-समय पर सोसाइटी के जर्नल में आपके विस्तृत खोजपूर्ण प्रबन्ध प्रकाशित होते रहे। लगभग बीस वर्ष तक आपने सोसाइटी के कार्य में विभिन्न प्रकार से सहायता पहुँचाई।

कलकत्ते के मिशन कॉलेज की समाप्ति पर आपकी सेवाएँ भारतीय-शिक्षा-सर्विस (I E S) में ले ली गईं और आपने कुछ काल तक प्रेसीडेन्सी कालज मद्रास में अध्यापन कार्य किया और बाद में वहीं पर प्रिन्सपल के पद को भी सुशोभित किया।

आपके पिताजी भारत में ही सरकारी पद पर थे जिसके कारण डा० हॉर्नली को अपनी युवावस्था में ही विभिन्न प्रान्तों में उनके साथ घूमना पडा। इस प्रकार आपको विभिन्न भाषाओं के बोलने वालों के सम्पर्क में आना पडा। आपने इस स्वर्णिम अवसर का सदुपयोग किया और उन सभी भाषाओं का व्यवस्थित रूप में वैज्ञानिक अध्ययन किया। उस काल में कुछ ही ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने पाषाण-शिला-लेख विज्ञान तथा प्राचीन-लेख विज्ञान का अध्ययन किया हो, लेकिन हॉर्नली महोदय ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से इस विज्ञान का अध्ययन किया और अथक् परिश्रम से बक्सली हस्तलिखित ग्रन्थ की गूढाक्षराणि व्याख्या प्रस्तुत की। भाषा वैज्ञानिक रुचि के कारण आपका सम्पर्क डा० ग्रियर्सन महोदय से भी हुआ और दोनों महारथियों ने मिलकर बिहारी बोलियों का कोश प्रकाशित कराया।

डॉ० हॉर्नली का सबसे महान् कार्य बोवर हस्तलिखित ग्रन्थ से सम्बन्धित है। यह ग्रन्थ भूर्ज वल्कल पर पुरानी भारतीय लिपि में लिखा हुआ था। इसका समय लगभग चौथी अथवा पाँचवीं शताब्दी था, इसका विषय था—औषधि, पिशाचविद्या तथा ज्योतिष विज्ञान। आपके द्वारा प्रकाशित यह ग्रन्थ न केवल आपके ज्ञान व बुद्धि का परिचायक है वरन् पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक परिचय भी देता है। औषधि सम्बन्धी कार्य तो नवनीतका (Cream of the Medical Science) नाम से प्रख्यात था। इस ग्रन्थ के अध्ययन से, आपकी औषध-विज्ञान से रुचि हो गई और फलस्वरूप जीवन का अन्तिम भाग आपने इसी कार्य में लगाया। आपका महान् कार्य "हिन्दुओं की अस्थियवर्णन विद्या" (Osteology of the Hindus) यह स्पष्ट करता है, कि आदि काल में भी वैदिक आर्यों का ज्ञान कितना था और मनुष्य तथा पशुओं की अस्थियों के विषय में उनका कितना गम्भीर ज्ञान था। आप हिन्दुओं के औषधि तथा शल्य विज्ञान पर एक महान्

ग्रन्थ लिख रहे थे। इस ग्रन्थ में चरक संहिता और सुश्रुत संहिता (Susruta) का अनुवाद करने का विचार था। इस कार्य का पूर्ण करने के पूर्व ही वह इस संसार से विदा हो गये। उनके इस असामयिक निधन से वैज्ञानिक संसार को वह ग्रन्थ न प्राप्त हो सका।

रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के तो आप भूषण थे। सन् १८९८ में तो आप सभापति भी रहे और आपका अध्यक्षीय भाषण आपकी सूझ-बूझ व अलौकिक प्रतिभा का ज्वलन्त उदाहरण है। इस भाषण का इतना अधिक प्रभाव हुआ कि आपको अनेक विश्व विद्यालयों से नियुक्ति पत्र प्राप्त हुए, लेकिन आपका सान्निध्य विश्व-विद्यालयों को फिर अधिक न प्राप्त हो सका। भारत से विशाल सामग्री एकत्र करके आपने कुछ काल तक ऑक्सफोर्ड के शान्त वातावरण में कार्य किया।

हिन्दी की धातुओं का संग्रह व उस पर वैज्ञानिक विवेचन भी आपके ज्ञान व परिश्रम का परिचायक है, जिसको हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह धातु पाठ जर्नल आव एशियाटिक सोसाइटी आव बैंगाल के खंड ४९ भाग १ में प्रकाशित हुआ था। वह अंक भी अब अप्राप्य हो चला है। इधर हिन्दी के धातु पाठ पर पुनः संकलन अध्ययन और सपादन की आवश्यकता पर बल दिया गया है। हार्नली महोदय का यह धातु पाठ अनुसंधित्सुओं और विद्वानों को हमारे इस प्रयत्न के द्वारा पुनः उपलब्ध हो सके इस दृष्टि से यह हिन्दी रूपान्तर यहाँ दिया जा रहा है। हिन्दी के भाषा तथा भाषा-विज्ञान विषयक ग्रन्थों में हार्नली महोदय के इस निबन्ध का उल्लेख हुआ है। पाठक अब ऐसे उल्लेखों का समाधान प्रस्तुत पुस्तिका के द्वारा कर सकेंगे।

इस संग्रह में हिन्दी की १९९ मूलधातुएँ १८९ यौगिक धातुएँ तथा २४ परिशिष्ट में दी गई मूल धातुएँ सम्मिलित हैं जिन में स्थान-स्थान पर संस्कृत की ४९९ धातुओं का उल्लेख हुआ है।

इसके हिन्दी रूपान्तर करने में हिंदी विद्यापीठ के अनुसंधान सहायक श्री चन्द्रभान रावत का विशेष हाथ रहा है और दूसरे अनुसंधान सहायक श्री कैलाशचन्द्र भाटिया जी ने भी इसमें अपना सहयोग प्रदान किया है।

डा० हार्नली

श्री कन्हैयालालजी इन्दरचन्दजी हीरावत
की ओर से सादर भेट

हिन्दी-धातु-संग्रह : व्युत्पत्ति और वर्गीकरण

हिन्दी-धातु से तात्पर्य है उस स्थायी तत्व से जो अर्थ के आधार पर सबद्ध शब्दो में किसी न किसी रूप में पाया जाता है। किसी शब्द के वर्तमान, अन्यपुरुष, एकवचन प्रत्यय (ऐ, ए) को निकाल देने से हिन्दी धातु अवशिष्ट रह जाती है।[1] हिन्दी तथा सस्कृत धातुओ के तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह सब से अधिक सुविधा जनक नियम है। इसका कारण यह है कि हिन्दी धातुओ में से अधिकाश की उत्पत्ति सीधे शुद्ध सस्कृत धातुओ से नही हुई है, बहुधा उनका जन्म सस्कृत-धातुओ के परिवर्तित रूपों से हुआ है। ये परिवर्तित रूप अधिकाश वर्तमान काल के हैं।

जब हिन्दी धातुओ के साथ प्रत्यय जुडता है तो उनमें नियमत कोई विकार उत्पन्न नही होता। केवल प्रेरणार्थक क्रिया रूपो में कुछ विकार आ जाता है दीर्घस्वर सदैव ही ह्रस्व कर दिया जाता है —

बोलना—बुलाना।
खेलना—खिलाना।

इसके अपवाद स्वरूप हिन्दी धातुओ में कुछ ऐसी भी धातुयें हैं जिनका रूप भूतकालिक कृदन्त तथा अन्य भूतकालिक रूपो में विकृत हो जाता है। ऐसे अपवाद कर, घर, जा, ले, दे, मर आदि हैं।

धातुओ को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है यौगिक तथा अयौगिक (Secondary and Primary)। अयौगिक धातुए वे हैं जिनका मूल रूप कुछ ध्वन्यात्मक विषयो के साथ सस्कृत में मिल जाता है। यौगिक धातुओ में वे धातुए आती हैं जिनके मूल रूप सस्कृत धातुओ में नही हैं। पर उनकी उत्पत्ति सस्कृत शब्दो से हुई है। जसे हिन्दी 'पैठ' का सबध सस्कृत धातु से नही है क्यो कि सस्कृत में 'प्रविष्ट' कोई धातु नही है, किन्तु सस्कृत कृदन्त 'प्रविष्ट' से हिन्दी 'पैठ' का सबध है। इन धातुओ को यौगिक धातुओ के वर्ग में रखा जाना है।

अयौगिक धातुओ में कुछ तो ऐसी हैं जिनमें हिन्दी तक आते आते कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नही हुआ है जैसे 'चल' धातु। किन्तु अधिकाश हिन्दी धातुओ में किमी न

---

१ उदाहरणत बोली, बुलाहट, बुलाना, बोला, बोले के मूल में 'बोल' धातु है।

किसी प्रकार का ध्वन्यात्मक परिवर्तन अवश्य हुआ है। ये ध्वन्यात्मक परिवर्तन सात प्रकार के हो सकते हैं। इन प्रकारों में से कभी एक कभी अनेक धातु को प्रभावित करते दीखते हैं। ध्वन्यात्मक परिवर्तन इस प्रकार हैं —

(१) ध्वनि संबंधी व्यतिहार व्यंजन का लोप या उसका मृदु हो जाना अथवा उसके समकक्षी स्वर का संकोच आदि।

स स्थाप > हि था।

(२) वर्गीय प्रत्यय (Class suffix) का योग। संस्कृत में प्रत्यय धातु और पुरुषवाचकान्त के मध्य में रहता है। इसी आधार पर संस्कृत धातुओं को दस वर्गों में विभाजित किया जाता है। हिन्दी में प्रत्यय धातु के साथ मिला दिए जाते हैं।

(३) कर्मवाच्य प्रत्यय 'य' का योग जैसे कि + या (था)।

(४) धातु वर्ग-परिवर्तन। संस्कृत-धातुओं को प्रत्ययों या ध्वन्यात्मक विकारों के अनुसार दस वर्गों (गणों) में विभाजित किया जाता है। इन वर्गों में से छठे वर्ग की धातुएं सब से सरल हैं। उनमें कोई आन्तरिक विकार नहीं होता केवल 'अ' प्रत्यय का योग पर्याप्त है। हिन्दी में प्राय सभी वर्गों की धातुओं को इस छठे वर्ग की धातुओं के रूपों में परिवर्तित कर दिया जाता है। यह या तो छठे वर्ग के प्रत्यय को अन्य वर्गीय प्रत्ययों के स्थान पर जमा देने से हो जाता है अथवा अन्य वर्गीय प्रत्ययों के अन्त्य स्वर को 'अ' में परिवर्तित करने से होता है।

(५) वाच्य-परिवर्तन। हिन्दी की कुछ धातुओं का उद्गम संस्कृत धातुओं के कर्म वाच्य रूप से है।

(६) काल-परिवर्तन। कुछ हिन्दी धातुओं का उद्गम संस्कृत धातुओं के भविष्य रूपों से है।

(७) ध्वन्यात्मक प्रत्यय 'अपि' का योग प्रेरणार्थक धातुओं में। यह नियम अपवाद रहित है।

यौगिक धातुओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है

(१) व्युत्पन्न धातुएं वे हैं जिन में मूलस्वर को ह्रस्व करके धातुएं बनाई जाती हैं।

(२) नाम धातुएं—वे हैं जो संज्ञाओं को धातु रूप में ग्रहण करने से बनती हैं।

जन > सं जन्म

ये संज्ञाएं या तो भाववाची होती हैं या कृदन्त।

(३) मिश्रित धातुएं इनमें संस्कृत धातु 'कृ' तथा इससे साधित संज्ञाएं रहती हैं। इसकी पहचान अन्त्य व्यंजन 'र' है।

इस वर्गीकरण के पश्चात् भी कुछ धातुएं इस प्रकार की रह जाती हैं जिनकी व्युत्पत्ति अभी ठीक ठीक निर्धारित नहीं की जा सकी है जैसे लो (ले जाना) तथा 'भीट' (भागना)। 'देख' धातु के संबंध में अनेक अनुमान लगाए जाते हैं। हिन्दी धातुओं के संबंध

में इन साधारण नियमो के उल्लेख के साथ नीचे हिन्दी की मुख्य-मुख्य धातुओ का एक सकलन व्युत्पत्ति तथा इतिहास सहित दिया जा रहा है।

(अ) मूल धातुए –

१ अट् (कमरा)—स० अट्, कर्मवाच्य अट्यते (कर्तृ वाच्य के भाव सयुक्त) प्रा० अट्टइ (हेमचन्द्र, ४,२३०) हिन्दी-अटै।

२ अनुहर (समान दीखना) स० अनु+हृ, प्रथमवर्ग-अनुहरति, प्रा० अणुहरइ (हेमचन्द्र ४,२५६), पू० हि० अनुहरै।[१]

३ आव् (आना)—इस धातु की व्युत्पत्ति का सतोषजनक निरूपण अभी नही हो पाया है। कुछ लोग इसका सबध सस्कृत धातु 'आ-या' से जोडते है जिससे मराठी धातु 'ये' (आना) व्युत्पन्न हुआ है। इस विचार के अनुसार अन्त्य व्यजन 'व' की व्युत्पत्ति की समस्या रह जाती है। एक बात हमारा ध्यान आकर्षित करती है कि 'आव' के रूप तथा 'पाव' (स० 'प्राप्) क्रिया रूपो में अत्यन्त समानता है। किन्तु 'आव' के रूपो की समानता धातु 'जा' (जाना) (स० 'या') से नहीं है। इस प्रकार वर्तमान कृदन्त का रूप पूर्वी हिन्दी मे 'आवत' तथा पश्चिमी हिन्दी में 'आवतु'[२] (आता हुआ) पूर्वी हिन्दी के 'पावत' तथा पश्चिमी हिन्दी के 'पावतु' (पाता हुआ) समान हैं। इसी प्रकार इन सभी क्रिया रूपो की समानता निर्विवाद है। इसमें भारतीय आधुनिक भाषाओ की क्रिया रूपो की अनुरूपता का सिद्धान्त कार्य कर रहा है। इस प्रकार 'आव' का 'व्' 'पाव' के प्रभाव के कारण है ऐसा प्रतीत होता है। इस प्रकार की अनुरूपता अत्यन्त प्राचीन है तथा इसके चिह्न प्राकृत तथा जिप्सी बोलियो में मिलते हैं।

४ आहर (खिलाना)—स० आहृ, प्रथम वर्ग-'आहरति, प्रा० आहरइ (हेमचन्द्र, ४, २५६ स० खादति) पूर्वी हिन्दी 'आहरै।'

५ उखाड (उखाडना)—स० उत्कृष्, प्रथम वर्ग 'उत्कर्षति', प्रा० उक्कड्ढइ (हेमचन्द्र ४, १८७) हि० उखाडै।[२]

६ उघाढ (निरावण करना)—स० 'उद्घट्', दशम वर्ग उद्घाटयति, प्रा० उग्घाडेइ, अथवा छठा वर्ग, 'उग्घाडइ' (हेमचन्द्र, ४३३) हि० उघाडै।

७ उठ् (Rise)—स० उत्-स्था, कर्तृवाच्य—उत्थीयते (कर्तृवाच्य के भाव सयुक्त) प्रा० उट्ठेइ अथवा छठा वर्ग, उठ्ठइ (हेमचन्द्र ४१७) हि० उठ। प्राकृत के छठे वर्ग का रूप 'उट्ठाअइ' अथवा 'उट्ठाइ' (वररुचि, ८२६) भी मिलता है।

८ उड् (Fly)—स० उद्डी, छठा वर्ग, उड्डीयते, प्रा० उड्डेइ अथवा छठा वर्ग, उड्डइ, हि० उडै।

९ उतर—स० उत्-तृ', प्रथम वर्ग उत्तरति, प्रा० उत्तरइ (हेमचन्द्र, ४३३९), हि० उतरै।

---

१ पश्चिमी हिन्दी में यह रूप नही मिलता। २ ब्रज में अधिकाश 'आयतु' मिलता है।

२ ब्रज भाषा में—ड का र हो जाने से उखारै रूप मिलता है।

१ उखम् (upset, come off from, come down) सं उत्खम प्रथम वर्ग उत्खमति (उख्खमति) प्रा उत्खमइ (हेमचन्द्र ४१०४) हि उखमै।[1]

११ उखार या उखाम (upset, take down)—सं० उत्खम प्रेरणार्थक उत्खामयति प्रा उत्खाडेइ अथवा छठा वर्ग 'उत्खासइ' हि० उत्खाले या उखारै।[2]

१२ उपज् (grow up) सं उत्पद्, छठा वर्ग उत्पद्यते प्रा उप्पज्जइ (हेमचन्द्र ११४२) हि उपजै।

१३ उबल (Boil)—स उद्‌ज्वल प्रथम वर्ग 'उज्ज्वलति' प्रा 'उब्बलइ' हि उबलै। —[ब्र उबरै]

१४ उबार (Keep in reserve)—स उद्‌वृ प्रेरणार्थक उद्वारयति प्रा उब्बारेइ या छठा वर्ग उब्बारइ, हि उबारै।

१५ उभार (raise up or excite) स उद्‌भृ स प्रेरणार्थ-उद्भारयति प्रा उब्भारेइ या छठा वर्ग उब्भारइ हि उभारै।

१६ उलह् या उलह् (grow up also reprove)—स उल्लस् प्रथम वर्ग उल्लसते उल्लहइ (त्रिविक्रम ३, १ १११ निस्सरति हेमचन्द्र ४ २५९ में उल्लुहइ) पूर्वी हि उलहै, प हि उलहै।

१७ उहर् (Subside)—स अवत् प्रथमवर्ग अवतरति प्रा ओहरइ, (हेमचन्द्र ४ ८५ ओयरइ) हि उहरै।

१८ ऊंघ् (be drowsy)—सस्कृत ? प्रा उंघइ (हेमचन्द्र ४ १२ निद्रायति) हि ऊंघै।

१९ ऊम (be excited raised up)—स उद्‌भू, प्रथमवर्ग उद्‌भवति प्रा उब्भवइ (वररुचि ८ १) या उब्भइ) हि ऊमै अथवा ऊर्ध्व प्रा उब्भ (हेमचन्द्र २ ५९)।

२ औंध—इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं में है।

२१ औट् (burn) सं अवकट् छठा वर्ग अवकट्यति प्रा ओकट्टइ, हि औटे।

२२ औंस (rot)—सं अपवस् प्रथमवर्ग अपवसति प्रा अववसइ, या ओवसइ, हि औंसै[3]।

२३ कर् (do)—स कृ अष्टमवर्ग करोति वैदिक (प्रथमवर्ग) में भी करति प्रा करइ (वररुचि ८ १३) हि करै। प्रा में (दशम वर्ग) करेइ (हेमचन्द्र ४ ३३७) भी है। वैदिक (पचम वर्ग) में कृणोति भी है प्रा कुणइ वररुचि ८ १३)।

२४ कस् (Test) स कष्, प्रथम वर्ग कषति प्रा कसइ हिन्दी कसै

२५ कस् (Tighten)—स कृष् प्रथमवर्ग कर्षति छठेवर्ग में कृषति भी इससे प्रा कसइ, हि कसै।

---

१ प हि में उखलै रूप मिलता है तथा व्रज में उखारै।

२ ब्र में उतारै।

३ व्रज में—औंसै मिलता है।

२६ कह (sa\ )—स० कथ्, दशम व.ग कथयति, प्रा० कहे (सप्तशतक हाल) (V ३५) या छठे वर्ग में कहइ (हेमचन्द्र, ४ २, पृष्ठ ६६) हि० कहै ।

२७ काट् (cut)--स० कृत्, प्रेरणार्थक, कर्तयति, प्रा० कट्टेइ या छठे वर्ग में—कट्टइ (हेमचन्द्र, ४, ३८५) हि० काटै ।

२८ काढ (draw)=इसकी व्याख्या यौगिक धातुओ के साथ है ।

२६ काप या कप् (tremble)=स० कप, प्रथम वर्ग कम्पति प्रा० कपइ, (हेमचन्द्र १,३०) हि० कांपै या कपै । *[ब्रज में इससे भाववाचक सज्ञा—कपकपी भी वनता है]

३० किन् या कीन (buy)=स० क्री, नवम वर्ग—क्रीणाति प्रा० किणइ (वररुचि, ८३०) या किणइ (Delius Radices Pracriticae) हि० किनै या कीनै ।

३१ कूट् (Pound)=स० कुट्ट, दशम वर्ग (कुट्टयति, प्रा० कुट्टेइ या छठवा वर्ग कुट्टइ, हि० कूटै ।

३२ कूद या कूद (jump)=स० स्कुद (या स्कद), प्रथम वर्ग 'स्कुदते, प्रा० कुदइ, हि० कूँदै, कूदै ।

३३ कोड या कोर (scrape)=स० कुट्, दशम वर्ग, कोटयते, प्रा० कोडेइ या कोडइ, प० हिन्दी कोडे या पू० हि० कोरै ।

३४ कोप् (be angry)=स० कुप्, छठा वर्ग 'कुप्यति', प्रा० कुप्पइ (हेमचन्द्र, ४,२३०) हि० कोपै ।

३५ खप् (be expended, sold)=स० क्षप, दशमवर्ग अथवा प्रेरणार्थक (कर्म वाच्य का) क्षप्यते, प्रा० खप्पइ, हि० खपै ।

३६ खा (eat)=स० खाद्, प्रथम वर्ग 'खादति', प्रा० खा अइ या इसका सकुचित रूप 'खाइ' (हेमचन्द्र, ४,२२८) हि० खाय् ।[1]

३७ खाँस (cough)=स० कास्, 'प्रथम वर्ग 'कासते', प्रा० कासइ, या खासइ (हेमचन्द्र, १, १८१)=खासिअ=कासित, हि० खाँसै ।

३८ खिल (be delightad, flower)=स० क्रीड्, कर्मवाच्य—क्रीड्यते, प्रा० खिड्डइ या खिल्लइ (हेमचन्द्र ४,१६८ खेड्ड तथा ४,३८२ खेल्ल) हि० खिलै ।

३९ खीज या खीझ (be vexed)=स० खिद, छठवा वर्ग खिन्दति, सप्तम वर्ग में खिन्ते या चतुर्थ वर्ग में खिद्यते, प्रा० खिज्जइ (हेमचन्द्र, ४,२२४,) हि० खीजै या खीझै ।

४० खल (open)=स० खुड्, कर्मवाच्य खुड्यते, प्रा० खुड्डइ या खुल्लइ, हि० खुलै ।[2]

---

१ प्राकृत में इसका कर्मवाच्य रूप खाद्यते भी प्रयुक्त हुआ है । किन्तु यह प्रयोग कर्तृवाच्य के भाव को स्पष्ट रूप से लिए हुए है, जैसे 'खज्जति' 'वे खाते हैं ।'

२ खुल, खोल, खूट धातुएँ एक दूसरी से सवधित हैं । इनका सवव सस्कृत धातुओं, क्षोट, खोट, खोड्, खोर्, खोल खुड खुण्ड, खुर, क्षुर वताया जाता है । इन सब का अर्थ होता है, लग गति, विभाजन करना, या तोडना । इनका मूल रूप क्षोट, क्षर, या क्षुट् है ।

४१ खूट (Pluck)—सं० खोट कर्म वाच्य, खोट्यते प्रा० खुट्टइ (हेमचन्द्र ४ ११६ यह प्रयोग स० तोड़ने का स्थानापन्न बताया जाता है जिसकी धातु 'तुड' है) हि० खूट।

४२ खेल् (Play)—सं० खेल् (कील तथा खेल) प्रथम वर्ग खेलति प्रा० खेल्लइ (हेमचन्द्र ४ १८८) या खेल्लइ (हेमचन्द्र ४ १८२) हि० खेलै (प्रा० में कीलइ भी मिलता है[1])।

४३ खो (Throw away lose)—सं० क्षिप्, छठवाँ वर्ग क्षिपति प्रा० खिवइ हि० खोय।

४४ खोल् (open) सं० स्फुट्, (divide) प्रथम वर्ग स्फोटयति प्रा० खोडेइ या छठवाँ वर्ग खोडइ या खोलइ हि० खोलै।

४५ गठ् (बाँधना)—सं० ग्रन्थ् दशम वर्ग ग्रन्थाति प्रथम वर्ग ग्रन्थति प्रा० गठइ (हेमचन्द्र ४ १२) हि० गठै।

४६ गढ या गड़ (बनाना या खोदना) सं० घट्, प्रथम वर्ग घटते प्रा० घडइ (हेमचन्द्र ४ ११२) हि० गढ़ै or गड़ै।

४७ गढाव् (बनाना) सं० घट् प्रेरणार्थक घाटयति प्रा० गढावेइ या गढावइ (हेमचन्द्र ४ ३४) हि० गढ़ावै।

४८ गन् या गिन् (गिनना)—सं० गण दशम वर्ग गणयति प्रा० गणेइ (सेतुबन्ध ११ २७) या छठवाँ वर्ग गणइ (हेमचन्द्र ४ ३५८) हि० गनै या गिनै।

४९ गम् (जाना)—सं० गम् कर्म वाच्य गम्यते प्रा० गम्मइ (वररुचि ७ १ ८ ५८) हि० गमै।

५ गरियाव् या गलियाव (गाली देना)—सं० गर्ह या गल्ह्, दशम वर्ग गर्हयति प्रा० गरिहावइ (हेमचन्द्र २ १ ४) या गलिहावइ, पूर्वी हि० गरियावै (गरिहावै)

५१ गल् (पिघलना)—सं० गल्, प्रथम वर्ग गलति प्रा० गलइ (हेमचन्द्र ४ ४१८) हि० गलै।

५२ गह् (पकड़ना)—सं० ग्रह्, नवम वर्ग गृह्णाति प्रा० छठवाँ वर्ग गेहइ (वररुचि ८ १५) या गहइ (त्रिविक्रम २ ४ १२७) हि० गहै।

५३ गा (गाना)—सं० गै प्रथम वर्ग-गायति प्रा० गायइ, या इसका सङ्कुचित रूप गाइ (वररुचि ८ २६) हि० गाय।

५४ गाव या गाय या पूर्वी हि० गाई—इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं में है।

५५ गिर् (गिरना)—सं० गॄ छठवाँ वर्ग गिरति प्रा० गिरइ हि० गिरै।

५६ गुह (बाँधना)—सं० गुफ् छठवाँ वर्ग गुफति प्रा० गुहइ (हेमचन्द्र १ २३६) हि० गुहै।

५७ गोंच् (catch)—सं० ग्लुच (ग्लुच) प्रथम वर्ग ग्लुचति प्रा० गुचइ, हि० गोंचै।

५८ घट् (कम होना)—सं० घट्ट कर्म वाच्य घट्टयते प्रा० घट्टइ, हि० घटै।

---

१ Delius Radices Pracriticae, पृ० ४७।

५९ घड (बनाना, घटित होना)=स० घट्, प्रथम वर्ग घटते, प्रा० घडइ, (हेमचन्द्र, ४, ११२) हि० घड ।

६० घस् या घिस् (रगडना) स० घृप्, प्रथम वर्ग घर्पति, प्रा० छठवाँ वर्ग घसइ (=घृपति) या घिसइ (हेमचन्द्र ४, २०४) जहाँ यह ग्रसति का स्थानापन्न बताया गया है । हि० घसै या घिसै ।

६१ घाल् (फेंकना, नष्ट करना, मिलाना)=स० घट्ट, प्रथम वर्ग घट्टते, प्रा० घड्डइ या घल्लइ (हेमचन्द्र ४, ३३४, त्रिविक्रम, ३, ४, ६ जहाँ यह क्षपति का स्थानापन्न बताया गया है, हि० घालै

६२ घुल् या घोल (द्रवीभूत पदार्थो का मिलना)=स० (घूर्ण, घुण् और घोल् भी) प्रथम तथा छठवाँ वर्ग घूर्णति (घोणते, घुणति घोलयति भी) प्रा० घुलइ या घोलइ (वररुचि ८, ६, हेमचन्द्र ४, ११७) हि० घोलै, घुलै ।

६३ घूम (घूमना) स० घूर्ण छठवाँ वर्ग—घूर्णति, प्रा० घुम्मइ (हेमचन्द्र, ४, ११७) हि० घूम ।

६४ घेर् (इकट्ठा करना, घेरना) स० ग्रह ?

६५ चढ् (बढाना, चढना) स० उत्शद्, छठवाँ वर्ग उच्छदति, प्रा० (उ का लोप करते हुए) चड्ढइ या चड्डइ (त्रिविक्रम ३,१ १२८) हि० चढै[१] ।

६६ चप् (be abashed)=स० चप् (दवाना) कर्मवाच्य चप्यते, प्रा० चप्पइ, (हेमचन्द्र ४, ३९५) चपिज्जइ, त्रिविक्रम, ३, ४, ६५ चप्पिज्जइ) हि० चपै । इसका सकर्मक रूप चाप् या चाँप है ।

६७ चर् (घास चरना)=स० चर्, प्रथम वर्ग चरति, प्रा० चरइ, हि० चरै ।

६८ चल् या चाल् (चलना)=स० चल्, प्रथम वर्ग चलति, प्रा० चलइ, या चल्लइ (हेमचन्द्र ४, २३१, हि० चलै या चालै) ।

६९ चव् (drip)=स० च्यु, प्रथम वर्ग च्यवते, प्रा० चवइ (हेमचन्द्र ४, २३३) हि० चवै ।

७० चाव् (चवाना)=स० चर्व्, प्रथम वर्ग चर्वति, प्रा० चव्वइ, हि० चावै)

७१ चिंत् (सोचना) स० चिंत्, दशम वर्ग चिन्तयति, प्रा० चिंतेइ (सप्तशतक १५६, हेमचन्द्र ४, २६५) या चिंतइ (हेमचन्द्र ४, ४२२) हि० चिंतै ।

---

१ उत्शद् का अर्थ ऊपर की ओर गिरना है । यह शब्द सस्कृत का एक अद्भुत शब्द है । सयुक्त उत्+पत् की भाति लिया गया है । अन्त्य 'द्' (शद्) प्रा० में 'ड' हो जाता है (हेमचन्द्र ४, १३० झडइ और वररुचि ८, ५१, हेमचन्द्र ४, २१९ सडइ) आरभिक 'उ' का लोप हो जाता है । 'छ' का महाप्राणत्व 'ड' के साथ सलग्न हो जाता है अथवा बिल्कुल समाप्त हो जाता है जैसे उच्छाह > (उत्साह) से चाह अथवा 'इच्छा' से । पुरानी हिन्दी में धातु 'चड्ढ' है, मराठी में चढ और चड दोनो हैं, गुजराती, सिन्धी तथा बगाली में 'चड' है । यही रूप हेमचन्द्र ने दिया है (४, २०६–चडइ) त्रिविक्रम (३, १२८) चड्डइ और चडइ दोनो देता है ।

७२ चिन् (इकट्ठा करना)—सं चि पंचम वर्ग चिनोति प्रा छठवाँ वर्ग चिणइ (वररुचि ८ २९, हेमचन्द्र ४ २४१) हि चिनै।

७३ चुन् (एकत्रित करना छाँटना)—सं चि पंचम वर्ग चिनोति प्रा० छठवाँ वर्ग चुणइ (हेमचन्द्र ४ २३८) हि चुन।

७४ चू (चूना)—सं च्युत (या श्च्युत) प्रथम वर्ग च्योतति प्रा चोअइ, या चुअइ (हेमचन्द्र २, ७७) हि चुए।

७५ चूम् (चूमना)—सं चुम्ब प्रथम वर्ग चुम्बति प्रा चुंबइ (वररुचि ८ ७१) हि चूमै।

७६ छा (Thatch)—सं छद् प्रथम वर्ग छादयति प्रा छाएइ (Delius Radices Pracriticae, ५४) या छठवाँ वर्ग छायइ (त्रिविक्रम २, ४ ११ या छावइ, हेमचन्द्र ४ २१ या (संकुचित होकर) छाइ वररुचि ८ २६) हि छाय्।

७७ छिप् या छिप् या छप (छपना)—सं क्षि (गुप्त रूप से रहना) प्रेरणार्थक कर्म वाच्य क्षेप्यते प्रा छिप्पइ or छिप्पइ, हि छिपै, छिपै या छपै।

७८ छो या छोह (छूना)—सं स्पृश् छठवाँ वर्ग स्पृशति, प्रा छिहइ या छिवइ (हेमचन्द्र ४ १८२) हि छोहै or छीयै।

७९ छीज् (नष्ट होना) सं क्षि कर्म वाच्य क्षियते प्रा छिज्जइ (हेमचन्द्र ४ ४१४) हि छीजै।

८ छ या छह—(छना)—सं छप छठवाँ वर्ग छपति प्रा छवइ हि छपै या छहै।

८१ छट या छट (छटना)—स छट (काटना) कर्मवाच्य छट्यते प्रा छुट्टइ, हि छूटै या छटै।

८२ छोड़ (छोड़ना)—स छुद्, प्रेरणार्थक छुदयति प्रा छोडेइ या छठवाँ वर्ग छोडइ, हि छोड़ै।

८३ जन् (जनमना)—स जन् प्रेरणार्थक जनयति प्रा जणेइ (सप्तशतक ७९) या छठवाँ वर्ग जणइ, हि जनै। संस्कृत के छठवें वर्ग में जायते भी है प्रा जायइ (हेमचन्द्र ४ १३६) हिन्दी decat.

४ जप् (उच्चारण करना)—सं जल्प प्रथम वर्ग जल्पति प्रा जपइ (वररुचि ८ २४) हि जपइ।

८५ जर् (ज्वर पीड़ित) सं ज्वर, प्रथम वर्ग ज्वरति प्रा जरइ हि जरै।

८६ जल् (जलना)—सं ज्वल्, प्रथम वर्ग ज्वलति प्रा जलइ (हेमचन्द्र ४ ३६५)

७ जा (जाना)—सं या द्वितीय वर्ग याति प्रा छठवाँ वर्ग जायइ या (संकुचित जाइ) (हेमचन्द्र ४ [illegible]) हि जाय।

८ जाग् या जागर (watch) स जागृ द्वितीय वर्ग जागर्ति प्रा प्रथम वर्ग जागरइ तथा छठवाँ वर्ग जग्गइ (हेमचन्द्र ४ ८) हि जागरै या जागै।

८९ जाच् (जाँचना)—सं या प्रथम वर्ग याचति प्रा छठवाँ वर्ग जाचइ (हेमचन्द्र ४ २[illegible]) हि जाचै।

९० जी (रहना)=स० जीव् प्रथम वर्ग जीवति, प्रा० जीअइ (हेमचन्द्र १, १०१) हि० जीऐ।

९१ जुझ् (लड़ना)=स० युध्, चतुर्थ वर्ग 'युध्यते', प्रा० जुज्झइ (वररुचि, ८, ४८) जुझै, पुरानी हिन्दी में 'झुझ्' रूप भी मिलता है।

९२ जुट् (लगजाना) स० जुट्, कर्मवाच्य 'जुट्यते', प्रा० जुट्टइ, हि० जुटै।

९३ जोड (join)=स० जुट्, दशम वर्ग 'जोटयति', प्रा० जोडेइ, या छवठाँ वर्ग हि० जोडै।

९४ झट् (Argue)=स० झट्, प्रथमवर्ग झटति, प्रा० झटइ, हि० झटै।

९५=झड् या झर (गिरना)=स० शद्, छठवाँ वर्ग—शदति, प्रा० झडइ, (हेमचन्द्र ४,१३० छडइ) हि० झडै, झरै।

९६ झाँट् (Rush about)=स० झट्, कर्मवाच्य झट्यते कर्तृवाच्य के भाव को लिए हुए प्रा० झटई (हेमचन्द्र ४, १६१, झट्टइ) हि० (झाँटै झट से स० झाट (झाडी) आता है, हि० झाट, ग्रीझाड)

९७ झाड् (झाडना)=स० शद्, कर्म वाच्य 'शादयति', प्रा० झडेइ, या छठवाँ वर्ग में झाडइ, हि० झाँडै।

९८ झाल् (Polish)=स० ज्वल (चमकना) (?) कर्मवाच्य ज्वालयति, प्रा० झालेइ या छठवें वर्ग में झालइ, हि० झालै। (cf) स० झल्ला (चमक) झल्लक्का (लपट)।

९९ टक् या टक (सीना)=स० टक्, प्रथम वर्ग—टकति, प्रा० टकइ, हि० टकै या टकै (सम्भवत यह 'कृ' धातु की एक संयुक्त धातु हो।)

१०० टूट् या तूट् (टूटना)=स० त्रुट्, छठवाँ वर्ग –त्रुटति (चौथे वर्ग में त्रुट्यति भी है) प्रा० तुट्टइ (हेमचन्द्र ४,२३०) या टुट्टइ (पिंगल, में डा० राजेन्द्र लाल मित्रा द्वारा उद्धृत, पृ० ६९) हि० तूटै, टूट।

१०१ ठक् (धोखादेना)+स० स्थग्, प्रथम वर्ग—स्थगति, प्रा० ठगइ, हि० ठगै।

१०२ डार् (डाल)=स० दृ (विखराहुआ) प्रेरणार्थक—दारयपि, प्रा० डारेइ या छठवें वर्ग में डारइ, हि० डारै या डालै।

१०३ डाँस् या डास (काटना)=स० दश् या दस्, प्रथम वर्ग—दशति या दसति प्रा० डसइ (हेमचन्द्र १,२१८) या डसड, हि० डाँसै, डासै या डसै।

१०४ डोल् (झूलना)=स० दुल्, दशम वर्ग—दोलयति, प्रा० दोल्लेइ (हेमचन्द्र ४, ४८) या डोलेइ (देखो हेमचन्द्र १,२१७ डोला) या छठवें वर्ग में डोलइ हि० डोल।

१०५ ढक् (ढकना)=स्थग्, कर्मवाच्य में स्थग्यते, प्रा० ढक्केइ (सप्तशतक A ५४ ठग्गेइ) या छठवें वर्ग में ढक्कइ (हेमचन्द्र, ४, २१, जहाँ यह 'छाद्' का स्थानापन्न बताया गया है, हि० ढकै (सप्त शतक, पृ० ४३,६४, ६७)[1]।

---

१ सम्भवत 'स्थाग्'—कृ धातु की यह संयुक्त धातु हो।

१२४ दाह् (जलाना)=स० दह्, प्रेरणार्थक दाहयति, प्रा० दाहेइ या छठवें वर्ग में दाहइ, हि० दाहै।

१२५ दिस् (दिखाता)=स० दिश्, छठवें वर्ग मे—दिशति, प्रॉ० दिसइ, हि० दिसै।

१२६ दिस् या दीस् (प्रकट होना)=स० दृश्, कर्मवाच्य दृश्यते, प्रा० दिस्सइ या दीसइ (हेमचन्द्र ३,१६१) हि० दिसै या दीसै।

१२७ दे (देना)=स० दा, कर्मवाच्य दीयते, प्रा० देइ (Cowell's Edn of प्राकृत प्रकाश, पृ० ६६, हेमचन्द्र ४,२३८) हि० देय या दे। सम्भवत छठवें वर्ग में दइ (सप्तश तक ५,२१६) हि० deest

१२८ देख् (देखना)=स० दृश् भविष्य द्रक्ष्यति (वर्तमान के भाव मे प्रयुक्त) प्रा० देक्खइ (हेमचन्द्र ४, १८१) हि० देखै।

१२९ धर् (रखना, पकडना)=स० धृ, प्रथम वर्ग धरति या धरते, प्रा० धरइ (हेमचन्द्र, ४, २३४) हि० धरै।

१३० धस् या धस् (डूबना, घुसना)=स० ध्वस्, प्रथम वर्ग—ध्वसते, प्रा० धसइ या धसइ (पिंगल, राजेन्द्रलाल मित्रा, पृ० ११८ में 'धावति' का स्थानापन्न बताया गया है) हि० धसै, धसै।

१३१ धार् (hold)=स० धृ, प्रेरणार्थक धारयति, प्रा० धरेइ या छठवाँ वर्ग-धरइ, हि० धरै।

१३२ धो (धोना)=स० धाव्, प्रथम वर्ग-धावति, (या धू, छठवाँ वर्ग-धुवति) प्रा० धोअइ (Delius Radices Pracriticae, पृ० ७८) या धोवइया धुअइ (सप्तशतक, ५, १३३, २८३) या धुवइ (हेमचन्द्र ४, २३८) हि० धोए या धोवै।

१३३ नट् (नाचना)=इसकी व्याख्या यौगिक धातुओ में देखिए।

१३४ नव् या नौ (bend, bow) स० नम्, प्रथम वर्ग नमति, प्रा० नमइ (देखो-हेमचन्द्र १, १८३ नमिम) या नवइ (हेमचन्द्र, ४, २२६) हि० नवै, नौए।

१३५ नवाव या निवाव (bend, fold) स० नम्, प्रेरणार्थक नमयति, प्रा० नवावेइ या छठवाँ वर्ग-नवावइ, हि० नवावै या निवावै।

१३६ नहा (नहाना)=स० स्ना, द्वितीय वर्ग-स्नाति, प्रा० चतुर्थ वर्ग ण्हाअइ (Delius Radices Pracriticae, पृ० २०) या (सकुचित) ण्हाइ (हेमचन्द्र ४, १४) हि० नहाय।

१३७ नाच् (dance)=स० नृत्, चतुर्थ वर्ग, नृत्यति, प्रा० नच्चइ (वररुचि ८,४७, हेमचन्द्र ४, २२५) हि० नाचै।

१३८ निकाल् या निकार् (बाहर खीचना)=देखि यौगिक धातुए।

१३९ निकास्=स० निस्-कस्, प्रेरणार्थक-निष्कासयति, प्रा० निक्कासेइ या छठवें वर्ग में निक्कासइ, हि० निकासै।

१४० निखोड़ या निखोर् (Peel) देखिये यौगिक धातुएँ ।

१४१ निखर् (साफ)—सं निःक्षर प्रथम वर्ग निःक्षरति प्रा निक्खरइ हि निखरै ।

१४२ निखार्—(Clean peel)—सं निखर (या निःक्षर्) प्रेरणार्थक निक्षारयति प्रा निक्खारेइ या छठवें वर्ग में निक्खारइ हि निखारै ।

१४३ निगल–(Swallow)—इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं के साथ है ।

१४४ निथार[1] (साफ करना)—सं निःस्था प्रेरणार्थ-निःस्थापयति प्रा निस्थालेइ या छठवें वर्ग में-निस्थालइ हि निथारै ।

१४५ निबड़ (प्रसन्न होना निश्चय होना पूर्ण होना)—सं निर्-वट (विभाजित करना) प्रथमवर्ग निर्वटमति प्रा निव्वडेइ या निव्वडइ (हेमचन्द्र ४ ६२ जहाँ इसका अर्थ पृथक बताया गया है, स्पष्टो वा भवति) हि निबड़ै ।

१४६ निबाह् (Accomplish)—सं निस्-वह प्रेरणार्थक-निर्वाहयति प्रा निव्वाहेइ या छठवाँ वर्ग निव्वाहइ, हि निबाहै या निभाय (महाप्राणत्व की अवस्था बदली हो गई) ।

१४७ निबाड़ (पृथक करादि)—सं निर-वट् (बाँटना) प्रेरणार्थक-निर्वाटयति प्रा निव्वाडेइ, हि निबड़ै ।

१४८ निबेड़ (पृथक करादि)—सं निर्-वड़ प्रथम वर्ग-निर्वडते प्रा निव्वडइ, हि निबेड़ै यह (१४७) का एक दूसरा रूप है ।

१४९ निवार् (hinder)—सं नि-वृ, प्रेरणार्थक निवारयति प्रा निवारेइ (हेमचन्द्र ४ २२) या छठवा वर्ग-निवारइ, हि निवारै ।

१५० निसर् (निकलना)—सं निस-सृ प्रथम वर्ग-निस्सरति प्रा निस्सरइ (रावणवहाग मित्रा पृ १ ७) या नीसरइ (हेमचन्द्र १ ६१ ४ ७९) हि निसर ।

१५१ नोच् (pinch)—सं निकुच छठवाँ वर्ग-निकुचति प्रा निउचइ हि नोचै (इ+उ) का ओ हो गया ।

१५२ पच (हजम होना)—सं पच्, कर्मवाच्य-पच्यते प्रा पच्चइ हि पचै ।

१५३ पठाव (भेजना)—सं प्र-स्था प्रेरणार्थक प्रस्थापयति प्रा पट्ठावेइ या छठवाँ वर्ग पट्ठावइ (हेमचन्द्र ४ ३७) हि पठावै ।

१५४ पड़ या पर (गिरना)—सं पत प्रथम वर्ग पतति प्रा पडइ (वररुचि ८ ५१) प हि पड़ै पु हि परै ।

१५५ पढ़ (पढ़ना)—सं पठ प्रथम वर्ग पठति प्रा पढइ (हेमचन्द्र १ १९९, हि पढ़ै ।

१५६ परख या परक (परीक्षा करना)—सं परि-ईक्ष प्रथम वर्ग-परीक्षते प्रा परिक्खइ, हि परखै (इस शब्द का एक गौण अर्थ अभ्यस्त होना और है) ।

१५७ परच (जान पूछ होना)—सं परि-चि प्रा छठवाँ वर्ग-परिच्चइ हि परचै ।

---

[1] यह शब्द जल के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है । यह पानी को निथार जाता है ।

१५८ पला या परा (भाग जाना) = स० पलाय, प्रथम वर्ग पलायते, प्रा० पलाअइ या सकुचित पलाइ, हि० पलाय् या पराय्।

१५९ परिहर् (छोडना) = स० परि-हृ, प्रथम वर्ग-परिहरति, प्रा० परिहरइ (हेमचन्द्र ४, २५९) हि० परिहरै।

१६० परोस् (खाना देना) स० परि-विप्, प्रेरणार्थक-परिवेपयति, प्रा० परिवेसेइ या छठवाँ वर्ग-परिवेसइ, हि० परोसै (ओ इवे)

१६१ पसर् (फैला हुआ) = स० प्र-सृ, प्रथम वर्ग–प्रसरति, प्रा० पसरइ (हेमचन्द्र ४,७७) हि० पसरै।

१६२ पसार् (फैलाना) = स० प्र० सृ, प्रेरणार्थक, प्रसारयति, प्रा० पसारेइ या छठवें वर्ग में पसारइ, हि० पसारै।

१६३ पसीज् (Perspire) = स० प्र—स्विद्, चतुर्थ वर्ग-प्रस्विद्यति, प्रा० पसिज्जइ (हेमचन्द्र ४,२२४) हि० पसीजै।

१६४ पसूज् (Stitch) = स० प्रसिव्, चतुर्थ वर्ग—प्रसीव्यति, प्रा० पसुज्जइ (सम्भवत 'पसि विज्जइ' का सकुचित रूप) हि० पसूजै।

१६५ पहिनाव् या पिहनाव (पहनाना) = स० पि-नह, प्रेरणार्थक-पिनाह्यति, पिनहावेइ, या छठवा वर्ग पिनहावइ, हि० पिहनावै (न तथा ह का विपर्यय हो गया) या पहिनावै (इ और 'अ' का विपर्यय)।

१६६ पहिर् (पहनना) = स० परि धा, कर्मवाच्य-परिधीयते, प्रा० परिधेइ या परिधइ या परिहइ, हि० पहिरै (र और ह का विपर्यय)।

१६७ पहिराव् (पहनाना) = स० परिधा, प्रेरणार्थक-परिधापयति, प्रा० परिधावेइ या छठवा वर्ग—परिधावइ या परिहावइ, हि० पहिराव (र और ह का विपर्यय)।

१६८ पहुँच् (पहुँचना) = स० प्र-भू, प्रथम वर्ग प्रभवति, प्रा० पहुच्छइ या पहूच्चइ (हेमचन्द्र ४,३९०) हि० पहूछै, पहूचै, पहुँचै[1]।

१६९ पाड् (let fall) = स० पत्, प्रेरणार्थक पातयति, प्रा० पाडेइ (हेमचन्द्र ४२२) या छठवें वर्ग में—पाडइ (हेमचन्द्र, तीन, १५३) हि० पाडै।

१७० पार् (Accomplish) = स० पृ, प्रेरणार्थक- पारयति' प्रा० पारेइ, या छठवें वर्ग में पारइ (हेमचन्द्र, ४८६) हि० पारै।

१७१ पाल् (पालना) = स० पा, प्रेरणार्थक-पालयति, प्रा० पालेइ या छठवें वर्ग में पालइ हि० पालै।

१७२ पाव् (प्राप्त करना) = स० प्र—आप्, पचम वर्ग प्राप्नोति, प्रा छठवाँ वर्ग—पावइ (हेमचन्द ४,२३९) हि० पावै।

---

१ इसका निर्माण निरर्थक प्रत्यय 'स्क्' के आधार मे हुआ है। केवल इसी शब्द में 'स्क' 'च्छ' में परिवर्तित हो जाता है और पीछे महाप्राणत्व का लोप हो जाता है।

१७३ पिपस् (पिपसाना)—सं अपि या पि-गस प्रथम वर्ग अपिगसति प्रा पिगसइ हि पिपसै।

१७४ पी (पीना)—सं पा प्रथम वर्ग पिबति प्रा पिअइ (हेमचन्द्र ४१) हि पीयै।

१७५ पीव (चूसना)—सं पिब भविष्य-पेक्ष्यति (वर्तमान के भाव के साथ) प्रा पेच्छइ हि पीवै (ध' के महाप्राणत्व का लोप हो गया।)

१७६ पीड़ (कष्ट होना)—सं पीड़ प्रथमवर्ग पीडते प्रा पीडइ हि पीड़ै।

१७७ पीस् (grind)—सं पिष् सप्तम वर्ग पिनष्टि प्रा दशमवर्ग पिसेइ (हेमचन्द्र ४१८५) हि पीसै।

१७८ पुराव् (Fill, thread)—सं पृ प्रेरणार्थक-पूरयति प्रा पुरावेइ या छठवें वर्ग में-पुरावइ, हि पुरावै (या प हि में पिरावै भी मिलता है)

१७९ पूछ् (पूछना)—सं प्रच् छठवां वर्ग-पृच्छति प्रा पुच्छइ (हेमचन्द्र ४९७) हि पूछै।

१८० पूछ या पोछ (wipe)—सं प्र—उञ्छ प्रथम तथा छठवें वर्ग में—प्रोञ्छति प्रा पोछइ या पुछइ (हेमचन्द्र ४१ ५) हि पोंछै या पूछ।

१८१ पूज (पूजना)—सं पूज् दशम वर्ग किन्तु प्रथम वर्ग में भी पूजति प्रा पूजइ हि पूज।

१८२ पइर् या पैर् (तैरना)—सं प्रतॄ प्रथम वर्ग-प्रतरति या छठवें वर्ग—प्रतिरति प्रा पइरइ पूर्वी हि पइरै प हि पैरै।

१८३ पइस् या पैस् (घुसना)—सं प्र-विश्, छठवें वर्ग में प्रविशति प्रा पविसइ (हेमचन्द्र ४ १८३) या पइसइ हि पइसै या पैसै।

१८४ पेल् (Squeeze out Shove)—सं पीड़ प्रथम वर्ग-पीडते प्रा पेल्लइ (हेमचन्द्र ४ १८३) हि पेलै (सम्भवतः पिष्ट पेड़ पेल्ह पेल्ल आदि की नाम धातु (Denomi native) हो।

१८५ पोग् (पालना)—सं पुष प्रथम वर्ग-पोषति प्रा पोसइ हि पोसै।

१८६ फट् या फाट् (burst)—सं स्फट् वर्मवाच्य स्फट्यते प्रा फट्टइ हि फटै या फटै।

१८७ फल् (bear fruit)—सं फल प्र वर्ग—फलति प्रा फलइ (गप्त-मतक १०) हि फलै (यह धातु स्फल तथा फल से समर्पित है)

१८८ फस् या फांस (फंसना)—सं स्पृश छठवां वर्ग—स्पृशति प्रा फसइ या फासइ (हेमचन्द्र ४ १८२ सम्भवतः फस और फांस = दोनों की नामधातु, वररुचि ४ १५ हेमचन्द्र २ ६२) हि फंसै या फांसै।[1]

---

[1] यह धातु सकर्मक रूप में भी प्रयुक्त होती है जाल में फंसाना या फंसा देना किन्तु हेमचन्द्र ४ १८१ जहाँ फसइ स्निह्यति का रूपान्तर दिया गया है।

१८६ फाड् (Cleave) = स० स्फट्, दशम वर्ग—स्फाटयति, प्रा० फाडेइ, या छटवें वर्ग में फाडइ (हेमचन्द्र १,१६८ २३२) हि० फाडै। हेमचन्द्र इसका सवध पट्' धातु से जोडता है जिसका दशम वर्ग—पाटयति होता है।

१६० फाद् (Jump) = स० स्पद, प्रेरणार्थक-स्पदयति, प्रा० फदेइ या छठवें वर्ग में फदइ, हि० फादै। (यह फँसाने के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, सकर्मक रूप में भी प्रयोग होता है। इसकी व्याख्या यौगिक धातुओ के साथ भी की गई है। इस धातु का मूल अर्थ हिलाना है। हेमचन्द्र 'फदइ' को इसी मूल अर्थ में प्रयोग करता दीखता है (हेमचन्द्र, ४,१२७) इसका सस्कृत रूप 'स्पदते' है। हेमचन्द्र इसका पर्यायवाची 'चुलुचुलइ' भी देता है। इसका प्रयोग भी हिन्दी मे, चुलचुलै, चुलवुलै, चुलमुलै, चुलचुलावै, आदि रूपो में अव भी है।

१६१ फाल् (कूदना) = स० स्फन् (हिलाना) प्रेरणार्थक—स्फालयति, प्रा० फालेइ, या छठवे वर्ग में—फालइ, हि० फालै सम्भवत यह धातु न० १८६ से सबंधित है (हेमचन्द्र ४,१६८ में इसे 'फाडइ' का दूसरा रूप फालेइ मानते हैं।

१६२ फिट् (be paid off, be discharged) = स० स्फिट्ट, दशम वर्ग, स्फिट्टयति, प्रा० फिट्टइ (हेमचन्द्र ४,१७७, यह 'भ्रश' से सवधित वताया गया है) हि० फिटै।

१६३ फुट्, फूट् (बढना, टूटना, तितर वितर होना) = स० स्फुट, कर्मवाच्य—स्फुट्यते, प्रा० फुट्टइ (वररुचि, ८,५३, हेमचन्द्र ४,१७७, जहा यह भ्रश का स्थानापन्न वताया गया है, जिसका अर्थ 'टूटता हुआ' है, हि० फुटै या फूटै (इसके सवध में धातु न० १६४ देखिए)

१६४ फुल् व फूल् (blossom) = स० स्फुट, छठवा वर्ग—स्फुटति, प्रा० फुट्टइ या फुडइ (वररुचि ८,५३) या फुल्लइ (हेमचन्द्र ४,३८७) हि० फुलै या फूलै।

१६५ फेर् या फिर् (घुमाना) स० परि+इ, द्वितीय वर्ग पयति, प्रा० फेरेइ या फेरइ ('प' 'फ' के रूप में परिवर्तित हो गया, 'अर्य' 'एर' में वदल गया, जैसे पर्यं त का पेरतो होता है) हि० फेरै।

१६६ फैल् (Spread) = स० स्फिट, दशम वर्ग—स्फेटयति, प्रा० फेडेइ, या छठवा वर्ग—फेडइ (हेमचन्द्र ४,३५८, हेमचन्द्र ४,१७७) ने 'फिडइ' को 'भ्रश' का स्थानापन्न माना है) या फेलइ स० धातु फेल्) हि० फैलै

१६७ फो (खोलना) = स० प्र-मुच्, छठवा वर्ग – प्रमुञ्चति, प्रा० पमुअइ (हेमचन्द्र, ४,६१) हि० फोऐ पोऐ = पउए)

१६८ फोड् (तोडना) स० स्फुट्, प्रेरणार्थक—स्फोट्यति, प्रा० फोडेइ, (हेमचन्द्र ४,३५०) या छठवां वर्ग—फोडइ, हि० फोडै

१६६ वच् (go away) स० व्रज्, प्रथम् वर्ग—व्रजति, प्रा० वच्चइ, (वररुचि ८,४७) हि० वचै। (अधिक सभावना 'वच' धातु से सबधित होने की है) अथवा यह कर्म वाच्यवृत्यते (स० धातु वृत्) से है।

२ बज् बाज् (ध्वनि)—सं वद्, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य—वाद्यते प्रा० वज्जइ (हेमचन्द्र ४ ४ ६) हि बजें या बाजें।

२ १ बझ् (फसना)—स बध् कर्मवाच्य—बध्यते प्रा बज्झइ (हेमचन्द्र २ २६ २४७ हि बझ।

२ २ बट् (बटना या बाटना) = स वट्, कर्मवाच्य—वट्यते प्रा वट्टइ, हि बटैं।

२ ३ बढ़ (पूर्वी हि बाढ़ै)—बढ़ना सं वृध्, प्रथम वर्ग—वर्धते प्रा वड्ढइ (वररुचि ८ ४४) हि बढ़ै पूर्वी हि बाढ़ै।

२ ४ बढ़ाव् (बढ़ाना)—सं वृध् प्रेरणार्थक वर्धयति प्रा वड्ढावेइ या छठवां वर्ग वड्ढावइ हि बढ़ावें (त्रिविक्रम ३ १/१३२ में वड्ढाविम—समापयति है)

२ ५ बताव (बहुना दिखाना)—स वृत प्रेरणार्थक—वर्तयति प्रा वत्तावेइ, छठवां वर्ग—वत्तावइ हि बतावैं।

२ ६ बध (मारना)—स वध या (बाध्, प्रथम वर्ग—बाधते) प्रा बधइ, हि बधैं।

२ ७ बन् (be made)—स वन कर्मवाच्य—वन्यते, प्रा वणम हिन्दी बनै

२ ८ बर् (चाही करना)—सं वृ पचम वग—वृणोति प्रथम वर्ग में वरति भी प्रा — वरइ (वररुचि ८ १२) हि बरैं।

२ ६ बरिस् या बरस्—स वृष् प्रथम वर्ग—वर्षति प्रा वरिसइ (वररुचि ८ ११) पूर्वी हि बरिसै प हि बरसे।

२१ बल् (जलना)—स ज्वल प्रथमवर्ग-ज्वलति प्रा बलइ (हेमचन्द्र ४ ४१६ बलति) हि बलै।

२११ बस् (dwell)—स वस् प्रथमवर्ग-वसति प्रा वसइ हि बसै।

२१२ बह् (बहना)—स वह् प्रथमवर्ग-वहति प्रा वहइ (हेमचन्द्र १ १८) हि बहै।

२१३ बांच् (Recite read) इसकी व्याख्या मौलिक धातुओं में देखिए

२१४ वाछ (इच्छा करना)—स वाछ प्रथम वर्ग-वाछति प्रा वछइ (त्रिविक्रम १ १ १११) हि बांछ।

२१५ बांध् (बांधना)—स बध् नवमवर्ग-बध्नाति प्रा छठवां वर्ग-बधइ (हेमचन्द्र १ १८७ हि बांधैं।

२१६ बाल् या बार् (जलाना Kindle)—स ज्वल् प्रेरणार्थक-ज्वालयति प्रा बालेइ या बालइ प हि बालें पूर्वी हि बारैं।

२१७ बास् (सुगंधि)—स वास् दसमवर्ग-वासयति प्रा वासेइ या छठवा वर्ग-वासइ हि बासै।

२१८ बिक् (बिकी) स —वि + क्री (बेचना) प्रेरणार्थक-विक्रीयते प्रा विक्केइ या विक्कइ हि बिकै।

२१६ बिगड् या पूर्वी हि बिगर्—स वि-घट्, प्रथमवर्ग-विघटते प्रा विघडइ (हेमचन्द्र ४ ११२) हि बिगड़ै या बिगड़ै।

२२० विगाड् (नष्ट करना) स० वि-घट्, प्रेरणार्थक-विघाटयति, प्रा० विगाढेइया छठवावर्ग विगाढइ, हि० विगाडै ।

२२१ विचार्-(सोचना) स० वि-चर्, प्रेरणार्थक-विचारयति, प्रा० विचारेइ या (छठवा वर्ग) विचारइ, हि० विचारै ।

२२२ विडर् (विखरना)=स० वि-दृ, नवमवर्ग-विदृणाति प्रा० प्रथम वर्ग विडरइ, हि० विडरै ।

२२३ विडार् (दूरहटाना)=स० वि-दृ, प्रेरणार्थक-विदारयति, प्रा० विडारेइ या (छठवांवर्ग विडारइ, हि० विडारै ।

२२४ वितर् (Grant)=स० वि-तृ, प्रथमवर्ग-वितरति, प्रा० वितरइ, हि० वितरै ।

२२५ वियार् (फैलाना)=स० वि-स्त, प्रेरणार्थक-विस्तारयति, प्रा० वित्यारेइ या (छठवां वर्ग) वित्यारइ, हि० वियारै ।

२२६ विराव् (Mock)=इसकी व्याख्या यौगिक धातुओ मे देखिए ।

२२७ विलख् या वि-लक्=स० वि-लक्ष्, दशमवर्ग-विलक्षयति, प्रा० विलक्खेइ या (छठवा वर्ग) विलक्खइ, हि० विलखै या विलकै ।

२२८ विलग् (अलग)=स० वि-लग्, कर्मवाच्य-विलग्यते (कर्तृवाच्य के भाव सहित) प्रा० विलग्गइ (वररुचि ८,५२) हि० विलगै ।

२२९ विलग (Ascend)=स० वि-लघ्, प्रथमवर्ग-विलघति, प्रा० विलघइ, हि० विलगै (विलघै के स्थान पर)

२३० विलस् (प्रसन्न होना), स० वि-लस्, प्र० वर्ग-विलसति, प्रथम विलसइ, हि० विलसै ।

२३१ विलव् (अन्तर्धान हो जाता) स०=वि-ली, प्रेरणार्थक-विलापयति, प्रा० विलावेइ या (छठवा वर्ग) विलावइ, हि० विलावै ।

२३२ विहर् (enjoy one' S self)=स० वि-हृ, प्रथमवर्ग-विहरति, प्रा० विहरइ, (हेमचन्द्र ४,२५९, यहाँ यह स० क्रीडति का स्थानापन्न बताया गया है) हि० विहरै ।

२३३ विहाय् या विहा (छोडना)=स० वि-हा, तृतीयवर्ग-विजहाति प्रा० प्रथमवर्ग-विहाअइ या विहायइ या (सकुचित) विहाय, हि० विहायै या विहाय (वररुचि ८,२६)

२३४ विसर (भूलना)=स० विस्मृ, प्रथमवर्ग-विस्मरति, प्रा० विसरइ (हेमचन्द्र ४,७४) हि० विसरै ।

२३५ वीझ (फाडना, तोडना)=स० भिद्, कर्मवाच्य-भिद्यते (कर्तृवाच्य के भाव सहित प्रयुक्त) प्रा० भिज्जइ, हि० वीझै (भीजै के स्थान पर)

२३६ वीत (गुजरना) देखिए यौगिक धातुएँ ।

२३७ वीन् या विन् (चुनना) स० व्री, नवमवर्ग-व्रीणाति या विणाति, प्रा० (छठवा वर्ग) वीणइ या विणइ, हि० वीनै या विनै ।

२५६ भर् (भरना) = स० भृ, तृतीय वर्ग–बिभर्ति तथा प्रथम वर्ग भरति, प्रा० भरइ (सप्तशतक-हाल २८८ भरति) हि० भरै ।

२५७ भव् या भौ (चक्कर खाना) = स० भ्रम्, प्र० वर्ग-भ्रमति, प्रा० भमइ, (हेमचन्द्र ४,१६१) या भवइ (हेमचन्द्र ४,४०१) हि० भवै, या भोए ।

२५८ भस् (तैरना) = स० भृ श, प्रथम वर्ग-भृ शति, प्रा० भसइ, हि० भसै ।

१५९ भाल् (देखना) = स० भल्, दशमवर्ग-भालयते, प्रा० भालेइ, या छठवा वर्ग-भालइ हि० भालै ।

२६० भास् (प्रतीत होना) = स० भास्, प्रथम वर्ग—भासते, प्रा० भासइ (हेमचन्द्र ४,२०३) हि० भासै । (प्राकृत में भिसइ भी मिलता है, हिन्दी मे इसका रूप भिसल् है)

२६१ भीज् (be affected) = स० भिद् (तोडना) कर्मवाच्य—भिद्यते, प्रा० भिज्जइ, हि० भीजै । अथवा—स अभि-अर्द, कर्मवाच्य अभ्यर्द्यते, प्रा० अभिज्जइ, हि० भीजै ।

२६२ भीज् (be wet) = देखिए यौगिक धातुए ।

२६३ भुज् (खाना) = स० भुज्, सप्तमवर्ग—भुनक्ति प्रा० छठवा वर्ग—भुजइ (हेमचन्द्र ४,११०) हि० भुजै ।

२६४ भून् (भूनना) — देखिए यौगिक धातुए ।

२६५ भेड (बन्दकरना) = बेढ के स्थान पर । देखिए २४४ ।

२६६ भेट (मिलना) = स० अभि—अट्, प्रथमवर्ग—अभ्यटति, प्रा० अब्भट्टइ, हि० भेटै (आरभिक 'अ' का लोप हो गया 'इ' के स्थान पर 'ए' आ गया ।

२६७ मच् (उठना, उत्तेजित होना) = स० मच् या मच् कर्मवाच्य—मच्यते, प्रा० मच्चइ (हेमचन्द्र ४,२३०, जहा इसका सबध सस्कृत धातु 'मद्' से जोडा गया है) हि० मचै । इस धातु से अनेक हिन्दी सज्ञाओ का जन्म हुआ है, जिनका अर्थ 'उठे हुए' के भाव में है । जसे माचा, मचा, मचाव, या मचाता (बडा पलग या रगमच) मचिया—(छोटी खाट) मच् (सुस्ती) इस से अनेक यौगिक धातुओ का भी जन्म हुआ है जैसे 'मचमच्' (खाट के जोडो की ध्वनि) मचक् (जोडो का दर्द) मचकाव् (पलक मारना) मचल्, या मचलाव् ।

२६८ मज् (साफ करना) = स० मृज, द्वितीय वर्ग - मार्ष्टि तथा प्रथम वर्ग—मृजति, प्रा० मजइ, हि० मजै ।

२६९ मढ, (cover) = स० मृद्—देखिए यौगिक धातुए ।

२७० मन् (be propitiated) = स० मन्, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य, मान्यते, प्रा० मन्नइ हि० मनै (देखिए २७७) ।

२७१ मर् (मरना) = स० मृ, छठवा वर्ग—म्रियते, वैदिक प्रथम वर्ग—मरति, प्रा० मरइ (वररुचि ८,१२) हि० मरै ।

२७२ मल् (रगडना) = स० मृद, नवम वर्ग—मृद्नाति, प्रा० छठवाँ वर्ग—मलइ (वररुचि ८,५०) हि० मलै ।

२७३ मइ (बिलोमा)—सं मथ् प्रथम वर्ग—मथति प्रा महइ, हि मई।

२७४ माग (मांगना)—स मार्ग दशम वर्ग—मार्गयति तथा प्रथम वर्ग—मार्गति प्रा मग्गइ (सप्तशतक-७१) हि मार्गे (cp स धातु मृग् चतुर्थ वर्ग—मृग्यति प्रा मग्गइ किन्तु नाम धातु 'मार्ग' अधिक सम्भव मूल है।

२७५ मांज (Scour)—सं मार्ज दशम वर्ग—मार्जयति (या धातु मृज् दशम वर्ग—मार्जयति देखिए २७४) प्रा० मजेइ या छठवां वर्ग मंजइ, हि मांजे।

२७६ माड़ या माड़ (रगड़ना)—सं मृद् नवम वर्ग—मृद्नाति या प्रथम वर्ग—मर्दति प्रा मड्डइ (हेमचन्द्र ४ १२६) हि माड़ or माड़ै।

२७७ मान् (आदर)—सं मन् प्रेरणार्थक—मानयति प्रा मानेइ, या छठवां वर्ग—मानइ हि मानै।

२७८ माप् or नाप् (नापना) स मा प्रेरणार्थक कर्मवाच्य माप्यते (प्रयोग कर्तृ वाच्य के भाव सहित) प्रा माप्पइ, हि मापै। 'नाप' या तो माप्' का भ्रष्ट रूप है अथवा यह इसी प्रकार सं प्रेरणार्थक कर्मवाच्य 'ज्ञाप्यते' (धातु-ज्ञा) से व्युत्पन्न हुआ है) प्रा नप्पइ, हि नापै।

२७९ मार् (पीटना या मारना)—सं मृ प्रेरणार्थक—मारयति प्रा मारिइ (हेमचन्द्र ४ ३३७) या छठवां वर्ग—मारइ (हेमचन्द्र १ १२१) हि मारै।

२८० मिल् (मिलना)—स मिल्, छठवां वर्ग—मिलति प्रा मिलइ (हेमचन्द्र ४ ३३२) हि मिलै।

२८१ मिस् (be pulverised)—स मृष् छठवां वर्ग—मृषति प्रा मिसइ, हि मिस।

२८२ मीच् या मींच् (पलक बन्द करना)—सं मिष् भविष्य—मेक्ष्यति (वर्तमान के भाव सहित) प्रा मेच्छइ व मिच्छइ, हि मीचैं या (भ्रष्ट) मींचै (देखिए १७५)

२८३ मींज् या मीज (रगड़ना)—सं मृज् द्वितीय वर्ग—मार्ष्टि या प्रथम वर्ग मृजति प्रा मिंजइ हि मींजै या मीजै।

२८४ मूड (Shave)—स मुड प्रथम वर्ग—मुडति प्रा मूडइ (हेमचन्द्र ४ ११५) हि मूड़ै।

२८५ मूस् (Steal)—स मुष् प्रथम वर्ग—मुषति, प्रा मूसइ (त्रिविक्रम २,४ ६६) हि मूस।

२८६ मोह (Allure)—स मुह् प्रेरणार्थक मोहयति प्रा मोहेइ या छठवां वर्ग—मोहइ, हि मोहै।

२८७ रख् (Keep)—स रक्ष् प्रथम वर्ग—रक्षति प्रा रक्खइ (हेमचन्द्र ४४३६) हि रखै।

२८८ रच् (प्रबन्ध बनाना)—सं रच्, कर्मवाच्य रच्यते (कर्तृ वाच्य भाव सहित) प्रा० रचइ (हेमच० ४४२२ २१ रचमि सप्तशतक ३६३ रचिवम रचित) हि रचै।

२८९ रम् (घूमना)=स० रम्, प्रथम वर्ग--रमते, प्रा० रमइ (हेमचन्द्र ४,१६८) हि० रमैं।

२९० रह् (Stop remain)=स० रक्ष्, कर्मवाच्य-रक्ष्यते, प्रा० रक्खइ, हि० रहै (रखै के स्थान पर) इसकी व्युत्पत्ति कुछ संदेहपूर्ण है। बीम्स महोदय ने (III, ४०) इसका संबंध स० धातु 'रह' से जोडा है, जिसका एक बिल्कुल ही भिन्न अर्थ रेगिस्तान है। 'रक्ष' से इसकी व्युत्पत्ति अधिक सम्भावित है। इसका समर्थक मराठी रूप राह=राख से होता है।

२९१ राज् (शोभित)=स० रज व रज् चतुर्थ वर्ग—रज्यति, प्रा० रज्जइ, हि० राजै।

२९२ राध या रीध (Cook)=स० रध्, प्रेरणार्थक—रन्धयति, प्रा० रधेइ या छठवा वर्ग--रधइ, हि० रांधै (भ्रष्ट) रीधै।

२९३ रिस् (क्रोधित होना)=स० रिष्, चतुर्थ वर्ग या कर्मवाच्य--रिष्यते, प्रा० रिस्सइ, हि० रिसै।

२९४ रुच् (रुचि पूर्ण होना)= स० रुच्, कर्मवाच्य-रुच्यते, प्रा० रुच्चइ, (हेमचन्द्र ४,३४१) हि० रुचै।

२९५ रुप् (be fixed)=स० रूह्, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य रोप्यते, प्रा० रोप्पइ या रूप्पइ, हि० रूपै।

२९६ रुस् या रूस (क्रोधित होना)=स० रुष्, चतुर्थ वर्ग रुष्यति प्रा० रुस्सइ, या रूसइ (वररुचि ,८,४६) हि० रूसै या रुसै। (देखिए-३०२)

२९७ रुद् या रूद या रोद या रौंद (कुचलना)=सम्भवत २९८ का भ्रष्ट रूप है।

२९८ रुध, रूंध, रोध, रोध (Enclose restrain)=स० रुध्, सप्तमवर्ग--रुणद्धि, प्रा० रुधइ (वररुचि-८७४९) हि० रुधै, रूधै।

२९९ रेंग् (रेंगना)=स० रिंग्, प्रथम वर्ग—रिंगति, प्रा० रिंगइ या रिंगइ, (हेमचन्द्र, ४,२५९) हि० रेंगै।

३०० रो (रोना)=स० रुद्, द्वितीय वर्ग--रोदिति, वैदिक भी छठवा वर्ग रुदति, प्रा० रुवइ (हेमचन्द्र ४,२२६,२३८) या रुअइ (सप्तशतक ३११) या प्रथम वर्ग—रोवइ (हेमचन्द्र ४,२२६, २३८) या रोग्रइ (क्रमद ईश्वर, प्राकृत ग्रामर, (४,६९) हि० रोवै, रोऐ।

३०१ रोल् (roll plan)=स० लुल्, प्रथमवर्ग लोलति प्रा० लोलइ, हि० रालै। इस प्रकार की अनेक धातुएँ है जो परस्पर सम्बद्ध है और जिनके अर्थ भी प्राय समान है जैसे रुट्, रूड्, रोड्, रौंड्, लुट, लुड्, लुल, लोड् आदि।

३०२ रोस (क्रोधित होना,=स० रुष्, वैदिक प्रथमवर्ग—रोषति प्रा० रोसइ हि० रोसै (देखिए २९६ भी)

३०३ लख् (देखना)=स० लक्ष् प्रथम वर्ग—लक्षते, प्रा० लक्खइ, हि० लखै।

३०४ लग् (be applied)=स० लग्, कर्मवाच्य—लग्यते, प्रा० लग्गइ (वररुचि, ८,५२) हि० लगै।

१०५ सम् या साम (सामना) = सं सम् प्रथमवर्ग—संयति प्रा समइ हि संमै सामै।

१०६ सक या पू हि सद् (सकना) = स सद दशमवर्ग—सक्यति प्रा सकइ या सक्कइ, प हि सक पू हि सर्के।

१०७ मस या मास (चमकना) = स रासु, प्रथमवर्ग ससति या दशमवर्ग—मासयति प्रा ससइ या मासइ हि० ससै या सासै।

१०८ सह् (पाना प्राप्त करना) = सं सम्, प्रथमवर्ग—सम्नते प्रा सहइ (हेमचन्द्र ४ ११५) हि सहै।

१०९—साज (सज्जा करना) = सं सज्ज्, प्रथमवर्ग—सज्जति प्रा सज्जइ (हेमचन्द्र ४ १ १) हि साजै।

११० सिख (सिखना) = स सिष्, छठवांवर्ग—सिखति प्रा सिखइ हि सिख। प्रा की धातु सिह (हेमचन्द्र १ १८७) हिन्दी में नहीं है।

१११ सिप् (be smeared) = सं सिप्, कर्मवाच्य सिप्यते प्रा सिप्पइ, हि० सिपै।

११२ सीप् या सेप् (smear) = स सिप्, छठवां वर्ग—सिम्पति प्रा सिंपइ (हेमचन्द्र ४ १४९) हि सीपै या सेप।

११३ सुड (roll) = स सुड्, छठवां वर्ग—सुडति प्रा सुडइ हि सुडै (देखिए १ १ ११४ ११७)।

११४ सुड (roll) = स सुठ छठवां वर्ग—सुठति प्रा सुडइ हि सुडै।

११५ सुट या सुठ् (rob) = स सुट या सुठ प्रथमवर्ग—सुटति या सुण्ठयति प्रा सुटइ व सुठइ, हि सूटै सूठै।

११६ से (सेना) = स०सम् प्रथम वर्ग-समते प्रा सहइ या सेइ (हेमचन्द्र ४ २१८) हि सेम या से। यह ह्राही सकुचित रूप से है जैसे कह का के और सहना से।

११७ सोट (roll out) = स सुट कठवांवर्ग-सुट्यति प्रा सोट्टइ (हेमचन्द्र ४ १४६) हि सोटै।

११८ सोम (be enamoured) = स सुभ चतुर्थ वर्ग-सुभ्यति प्रा सुब्भइ (हेमचन्द्र ४ १२१) हि सोभै। उ का औ मे परिवर्तन।

११९ बार (बेध देना) = स बृ प्रेरणार्थक बारयति प्रा बारेइ या छठवां वर्ग-बारइ, हि बारै।

१२ सक (can) = स शक् कर्मवाच्य-शक्यते (कर्त वाच्य के भाव के सहित) प्रा सक्कइ (वररुचि ४२) हि सक।

१२१ सभार् सहार (या समार सहारेइ) = सं सम-हृ प्रेरणार्थक-सहारयति प्रा सहारेइ या सभारेइ (हेमचन्द्र १ २६४) या छठवां वर्ग-सभारइया हि सहारै।

१२२ सच्-एकत्रित करना—स सम्-चि कर्मवाच्य-सचीयते कर्तृ वाच्य के भाव से युक्त प्रा सचेइ (हेमचन्द्र ४ २४१) छठवां वर्ग-सचइ हि सचै।

३२३ सट् या सट् (be combined) = सं० सम्-स्त्या, कर्मवाच्य-सम्स्त्यीयते (कर्तृवाच्य के भाव सहित) प्रा० सठेइ या छठवां वर्ग-सठइ, हि० सठे या सठे ।

३२४ सड् या सर् (rot) = सं० सद् (या शद्) प्रथम वर्ग-सीदति, किन्तु वैदिक भी-सदति, प्रा० सडइ (हेमचन्द्र ४,२१९) प० हि० सडे, पू० हि० सरे ।

३२५ सताव् (persecute) = सं० सम्-ताप्, प्रेरणार्थक-संतापयति, प्रा० संतावेइ या (छठवां वर्ग) सतावइ, हि० सतावे ।

३२६ सद् (चूना) = सं० स्यद् प्रथम वर्ग-स्यन्दते, प्रा० सदइ, हि० सदे ।

३२७ सभार् (Sustain) = सं० सम्-भृ, प्रेरणार्थक-सम्भारयति, प्रा० सभारेइ, या (छठवां वर्ग) सभारइ, हि० सभार्ले । नाम धातु सम्भार ।

३२८ समाव् (be contained) = सं० सम्-आप्, पंचम वर्ग-समाप्नोति प्रा० दशमवर्ग, समावेइ (हेमचन्द्र ४,१४२) या छठवां वर्ग-समावइ, हि० समावे ।

३२९ समुझ् या समझ् (समझना) = सं० सम्-बुध्, चतुर्थ वर्ग-सम्बुध्यते, प्रा० सबुज्झइ, पू० हि० समुझै प० हि० समझै ।

३३० सर् (Issue, be ended) = सं० सृ, प्रथम वर्ग-सरति प्रा० सरइ (वररुचि ८, १२) हि० सर ।

३३१ सराह (प्रशंसा करना) = सं० श्लाघ्, प्रथम वर्ग-श्लाघते, प्रा० सलाहइ (हेमचन्द्र, २, १०१-में सलहइ है) हि० सराहे ।

३३२ सल् (pierce) = सं० शल् या सल्, प्रथम वर्ग-शलति या सलति, प्रा०-सलइ, हि० सले ।

३३३ सवार् (तैयार करना) = सं० सम्-वृ, प्रेरणार्थक-सवारयति, प्रा० सवारेइ, या (छठवां वर्ग) सवारइ, हि० सवारे ।

३३४ सह् (सहना) = सं० सह्, प्रथम वर्ग-सहते, प्रा० सहइ (हेमचन्द्र १,६) हि० सहै ।

३३५ सहर् (arrange) = सं० सम्-हृ, प्रथम वर्ग-संहरति, प्रा० संहरइ (हेमचन्द्र ४, २५९) = सं० संवृणोति, हेमचन्द्र ४,८२ में साहरइ भी है) पू० हि० सहरै ।

३३६ साध् (settle) = सं० साध्, प्रेरणार्थक साधयति, प्रा० साधेइ, या (छठवां वर्ग) साधइ, हि० साधे । रूप साह हिन्दी में नहीं होता है ।

३३७ सार् (Accomplish) = सं० सृ, प्रेरणार्थक-सारयति, प्रा० सारेइ, या (छठवा वर्ग) सारइ हि० सारै ।

३३८ साल् (pearce) = सं०-शृ, प्रेरणार्थक शारयति, प्रा० सारेइ, या (छठवा वर्ग) सारइ, हि० साले या 'शल्' का प्रेरणार्थक देखो ३३२ ।

३३९ साँस् (Threaten, distress) = सं० स्रस्, प्रेरणार्थक—स्रसयति, प्रा० ससेइ या छठवांवर्ग—ससइ, (हेमचन्द्र ४,१९७ जहां पर स्रंसते भी है) हि० साँसे ।

३४० सी (Sew) = सं० सिव्, चतुर्थवर्ग—सीव्यति, प्रा० (छठवांवर्ग)—सिवइ या सिम्रइ, हि० सिए । (हेमचन्द्र ४,२३० सिव्वइ भी देता है, जिससे हिन्दी सीवे बनता है पर यह रूप अब नहीं रहा, दूसरा रूप सिव्वइ हिंदी सीवै)

१४१ सीख (learn)—सं शिक्ष् प्रथम वर्ग-शिक्षते प्रा (सिक्खइ) (सप्त शतक १५१) हि सीखै।

१४२ सीव् या सीव—स सिव् छठवांवर्ग -सीव्यति प्रा सिव्वइ (हेमचन्द्र ४ २३१) या सिव्वइ (हेमचन्द्र ४२३) हि सीवै। हिन्दी सीवै सीवै या सीवै (वररुचि २४१ सत —सप्त)

१४३ सीज् (Exude, sweat)—स० स्विद्, चतुर्थवर्ग -स्विद्यति प्रा० सिज्जइ (हेमचन्द्र ४ २२४) हि सीजै (१४४ भी देखिए)।

१४४ सीज् (Seethe, boil, sweat) स श्री (या श्रा) कर्मवाच्य-श्रीयते प्रा० सिज्जइ, हि सीजै।

१४५ सीज् (be received be liquidated)—स सि कर्मवाच्य-सीयते प्रा सिज्जइ हि सीजै।

१४६ सुधार् (सजाना)—स सु-धृ प्रेरणार्थक-सुधारयति प्रा सुधारेइ या (छठवां वर्ग) सुधारइ हि० सुधारै।

१४७ सुन् (सुनना) स श्रु पंचमवर्ग शृणोति प्रा छठवांवर्ग -सुणइ (वररुचि ८ ५६) हि सुनै।

१४८ सुमर् (याद करना) = स स्मृ प्रथमवर्ग -स्मरति प्रा सुमरइ (वररुचि ८ १८) हि सुमरै।

१४९ सुहा् (अच्छा लगना)—सं शुभ् दशमवर्ग-शुभयति प्रा सुहावेइ (सप्त शतक १६६) या (छठवां वर्ग) सुहावइ हि सुहावै।

१५ सूघ (सूँघना)—स सम्-आ घ्रा प्रथमवर्ग समाजिघ्रति (या द्वितीय) वर्ग-समाघ्राति प्रा समग्घेइ या स समग्घइ, हि सूघै।

१५१ सूज् (Swell)—स श्वि कर्मवाच्य-शूयते प्रा सुज्जइ हि सूजै।

१५२ सूझ (Appear)—स शुध्, चतुर्थ वर्ग शुध्यति प्रा सुज्झइ (हेमचन्द्र ४ २१७) हि सूझै।

१५३ सेंद् (Irrigate)—सं स्यन्द् प्रेरणार्थक-स्यन्दयति प्रा सिंदेइ या (सत्रवां वर्ग) सिंदइ हि सेंदै।

१५४ सेव् या सेइ (serve) स सेव् प्रथम वर्ग-सेवते प्रा सेवइ (हेमचन्द्र ४ १६६) हि सेवै या सेइ।

१५५ सोध् (सोध करना या साधना)—स शुध् कर्मवाच्य-शुध्यते (प्रयोग बहु वाच्य का भाव लिए हुए) प्रा सुज्झइ हि सोधै।

१५६ सोह् (चमकना)—स शुभ् प्रथम वर्ग—शोभते प्रा० सोहइ (हेमचन्द्र १ १८७) हि सोहै।

१५७ सौंप् (deliver)—सं सम्—अर्प् प्रेरणार्थक—समर्पयति प्रा समप्पेइ या छठवां वर्ग—समप्पइ हि सौंपै।

१५ हन् (Kill) सं हन् प्रथम वर्ग-हन्ति किन्तु वैदिक भी प्रथम वर्ग-हनति प्रा हणइ (हेमचन्द्र ४ ४१८) हि हनै।

३५९ हर् (Take away) = स० हृ, प्रथमवर्ग—हरति, प्रा० हरइ (हेमचन्द्र ३,२३४) हि० हरै।

३६० हरिस् या हरस् (be glad) = स० हृष् प्रथम वर्ग—हर्षति, प्रा० हरिसइ, (वररुचि, ८,११ (सम्भवत नाम हरिस = हर्ष) पू० हि० हरिसै, प० हि० हरसे।

३६१ हलप् (Toss about) स० ह्लृ, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य—ह्लाप्यते प्रा० हलप्पइ, हि० हलपै।

३६२ हवा (Scream) = स० ह्वे, प्रथमवर्ग ह्वयति, प्रा० छठावर्ग—हवाअइ या (सकुचित) हवाइ, हि० हवाय्।

३६३. हस्, हांस् (laugh) = स० हस्, प्रथम वर्ग—हसति, प्रा० हसइ (त्रिविक्रम २,४,६६) या हस्सइ (कर्मवाच्य) हि० हँसे या हांसे।

३६४ हांप् या हांफ् (blow) = स० ध्मा, प्रेरणार्थक ध्मापयति, प्रा० धपेइ या छठवां वर्ग धंपइ या हपइ, हि० हांपै या हांफै।

३६५ हाल् (Shake) = स० ह्वल्, कर्मवाच्य—ह्वल्यते (प्रयोग कर्तृवाच्य का भाव लिए हुए) प्रा० हल्लइ, हि० हालै।

३६६ हिल् (हिलाना) = स० ह्वृ, प्रथमवर्ग—ह्वरति, प्रा० छठवांवर्ग—हिरइ या हिलइ, हि० हिल।

३६७ हुन् (Sacrifice) = स० घृ, पचमवर्ग घृणोति, प्रा० छठवांवर्ग—घुणइ या हुणइ (हेमचन्द्र ४,२४१, जहां इसका सबध सस्कृत धातु 'हु' से बताया गया है) हि० हुनै।

३६८ हूल (drive) स० हूड (go) प्रेरणार्थक-हूडयति, प्रा० हूडेइ, या छठवां वर्ग—हूडइ, हि० हूलै।

३६९ हो (be) = स० भू, प्रथम वर्ग—भवति, प्रा० भवइ या हुवइ या हवइ, या होइ (हेमचन्द्र ४,६०) हि० होय।

हिन्दी-धातु-संग्रह

(खड २)

आ—यौगिक-धातुएँ

१ अटक् (सयुक्त धातु)=स० अट्ट+कृ, प्रा० अट्टकेइ या अट्टक्कइ, हि० अटकै ।

२ उचक् (सयुक्त धातु)=उठना=स० उच्च+कृ, प्रा० उच्चक्केइ या उच्चकइ, हि० उचकै ।

३ उवक (सयुक्त धातु)=स० उद-वभ्+कृ, प्रा० उव्वक्केइ या उव्वक्कइ, हि० उवकै ।

४ ऊक या ओक (Vomit)=सयुक्त धातु - स० वम+कृ, प्रा० वमक्केइ या वमक्कइ, अपभ्रश—प्रा० ववँक्कइ, हि० ओंकै या ऊकै ।

५ उखड् (derivative)—कर्मवाच्य या अकर्मक रूप है उखाड ।[1] (६) ।

६ उखाड् (नाम धातु) या उखेड=स० भूतकालिक कृदन्त-उत्कृष्ट, प्रा० उक्कड्ढइ (हेमचन्द्र ४,१८७) हि० उखाडै या उखेडै या उकेढै ।[2]

७ ओढ् (नाम धातु)=स० उपवेष्ट, प्रथम वर्ग-उपवेष्टते, प्रा० ओवेड्ढइ (हेमचन्द्र ४, २२१) हि० ओढै । आवें से सकुचित 'ओ' धातु 'विश' का भूतकालिक कृदन्त ।

८ कडक् (सयुक्त धातु) (Crackle, thunder)=स० कर्द +कृ, प्रा० कड्डक्केइ या कड्डक्कइ, हि० कडकै ।

९ कमाब् (नाम धातु) earn=स० सज्ञा-कर्म, प्रा० कम्मावेइ या कम्मावइ (हेमचन्द्र, ४, १११ में कम्मवइ है तथा यह धातु 'उपभुज्' का स्थानापन्न बताया गया है) ।[3] हि० कमावैं ।

---

१ 'अवँ या अम के स्थान पर औ' देखिये—हार्नले—तुलनात्मक व्याकरण—१२२

२ 'उकाढै के स्थान पर उखाडै'—देखिये, हार्नले—तुलनात्मक व्याकरण—१३२ (Change a to e) 'अ' से 'ए' देखिये—हार्नले—तुलनात्मक व्याकरण—१४८

३ (the á is shortened to a by Hemchandra ३,१५०)

१० कसक (संयुक्त धातु)—सं कष+कृ प्रा कसक्केइ या कसक्कइ हि कसके।

११ कद् (derivative) कर्मवाच्य या अकर्मक इसका जनक धातु 'काद' से हुआ है (देखिए, मूलधातु २७)।

१२ कढ (derivative) धातु 'काढ' का कर्मवाच्य या अकर्मक है (देखिए—११)

१३ काढ़ (नाम धातु)—सं भूतकालिक कृदन्त-कृष्ट प्रा कड्ढइ (हेमचन्द्र ४ १८७) हि काढ़े।

१४ खरक (संयुक्त धातु) या खड़क—सं स्खल+कृ प्रा खलक्कइ या खडक्कइ, हि खरके या खड़के। इसी अर्थ वाली एक भिन्न धातु और है—खर् खर् खड़-खड़। ये मराठी और पंजाबी में भी हैं। इस धातु का मूल अर्थ है फिसलना या लुढ़कना—शब्द करते हुए। इसके दर्शन मराठी के खड़क या खरक (धारा का प्रवाह पथ) में होते हैं। धातु 'खड़' का प्रयोग भी मराठी में है जिसमें मौलिक अर्थ छिपा हुआ है—गिरना। पंजाब में भी है जहाँ इसका अर्थ 'ले जाना' है।

१५ गड़ (derivative) (be hollowed be sunk) कर्मवाच्य अकर्मक है जो धातु 'गाड़' (देखिए १६) से व्युत्पन्न है।

१६ गाड़ (नाम धातु)—सं संज्ञा—गर्त प्रा गड्ड (वररुचि १ २५) प्रा गड्डेइ या गड्डइ हि गाड़े अथवा इसका अपभ्रष्ट रूप-गाड़े (१७)

१७ गाड़ —सं भूतकालिक कृदन्त—गाढ़ प्रा गाढइ हि गाढ़े।

१८ गोद (नाम धातु) चिह्नित करना या गोदना—सं संज्ञा-गोर्द प्रा गोद्देइ या गोद्दइ, हि गोदे (?)

१९ गबराव् (नाम धातु)—सम्भवत 'गड़बड़ाव' का अपभ्रष्ट रूप है, जिसका अर्थ नहीं है। यह 'गड़ड' से बना है—सं संज्ञा-गर्त (शब्द चिल्लाहट आदि)।

२० घिसाव या घिसियाव (नाम धातु)—सं संज्ञा-घृष्टा या (denominative) घृषि का (धातु-घृष)—प्रा घिसा (हेमचन्द्र १ १२८) या घिघिसा प्रा घिसावेइ या घिसावइ या घिघिसावेइ या घिघिसावइ, हि घिसावे घिसियावे।

२१ चिर् (derivative)—'चीर' का कर्मवाच्य अकर्मक (देखिए मूल धातु—१४)

२२ चपक (संयुक्त धातु)—सं चप या चर्प+कृ प्रा चप्पक्केइ, या चप्पक्कइ हि चपके।

२३ चमक (संयुक्त धातु) glitter—सं चमत्+कृ कर्मवाच्य-चमत्क्रियते (कर्तृवाच्य के भावसहित) प्रा चमक्केइ, या चमक्कइ हि चमके।

२४ चाह (नाम धातु) 'चाह' का अपभ्रष्ट रूप (देखिए—४)

२५ चिर् (derivative) be torn—'चीर' धातु का कर्मवाच्य या अकर्मक रूप। देखिए—११

---

४ The Change of 'ल' या 'र' to 'ड' या 'ड़' is anomolous. यह प्राकृत में हो गया था। हाल की सप्तशतक ४४ खलखलइ—सं खलखलति सप्तशतक १६६, जहिम स स्खलित। सम्भवतः स्कन्द धातु से कोई सम्बन्ध हो। धातु धर और धाम् भी दर्शनीय है। धातु खरक और फरक भी देखिए।

२६ चिकनाव् (नाम धातु) smooth polish = स० सज्ञा-चिक्कण या चिक्किण (सम्भवत यह भी एक सयुक्त शब्द है 'चित्' का = चित्र और कृ = प्रा० किण) प्रा० चिक्कणावेइ या चिक्कणावइ, हि० चिकनावै ।

२७ चिढ़ाव (नाम धातु) या चिडाव, गाली देना = स० भूतकालिक कृदन्त क्षिप्त ('क्षिप्' धातु से व्युत्पन्न) प्रा० छिडावइ, हि० चिढावै (महाप्राणत्व का विपर्यय) या चिडावै (महाप्राणत्व का लोप)[५]

२८ चिताव् (नाम धातु) = स० भूत कालिक कृदन्त-चित्त, प्रा० चित्तावेइ या चित्तावइ (सेतुबन्ध, ११,१) हि० चितावै[६] ।

२९ चीत् (नाम धातु) Paint = स०-सज्ञा-चित्र, स० चित्रयपि, प्रा० चित्तेइ या चित्तइ, हि० चीतै ।

३० चीन् या चीन्ह (नाम धातु) पहचानना = स० सज्ञा-चिह्न, प्रा० चिण्ह (हेमचन्द्र २,५०) स० चिन्हयति, प्रा० चिण्हेइ या चिण्हइ हि० चीन्है या चीनै ।

३१ चीर (नाम धातु) फाडना = स० सज्ञा-चीर (rag) इससे स० चीरयति, प्रा० चीरेइ या चीरइ, हि० चीरै ।

३२ चुक (सयुक्त धातु) समाप्त होना = स० च्युत + कृ, प्रा० चुक्कइ, (हेमचन्द्र ४, १७७) हि० चुकै ।[७]

३३ चूक (गलती) = स० च्यु + कृ, प्रा० चुक्कइ, हि० चूकै ।[७]

जहाँ तक व्युत्पत्ति का सबध है, यह धातु पूर्व धातु (३२) के समान ही है । मौलिक अर्थ 'गिरना' 'भूल' में परिवर्तित हो सकता है । इस अर्थ में यह प्राकृत में बहुधा मिलता है (सप्त शतक, ५,३२३) चुक्कसकेआ भूल की, फिर-सप्त शतक ५,१९९, सेतुबन्ध १,९ में भी है, जहाँ टीका इसकी इस प्रकार व्याख्या करती है 'प्रमादे देशी इति केचित्' अर्थात् कुछ के मतानुसार यह शब्द 'देशी' शब्द है, जिसका अर्थ भूल करना है— देखिए—S Goldschemidt's edition of सेतुबन्ध ।

---

५ (अ) महाप्राणत्व के परिवर्तन के सम्बन्ध में देखिये—
न० ४७ छेड् या छोड् जहाँ महाप्राणत्व है ।
(ब) मूल धातु = ६५ चढ्
(स) 'प्त' का 'न्त' और 'ड' (ड्ड) हो जाना—देखिये धातु जुडाव जो भूतकालिक कृदन्त 'युक्त' से बना है ।
(द) मूलधातु न० ९२, ९३ जुट् और जोड् ।

६ सेतुबन्ध ११,१ भूतकालिक कृदन्त 'चित्तविअ' प्राप्त होती है—(हेमचन्द्र ३१५०) जिसकी ठीक से व्याख्या में अर्थ 'चेतित' या 'निवृत्त' या परितोषित लिखा गया है ।

७ हेमचन्द्र ने इसके स्थान पर सस्कृत् धातु 'भ्रंश' (Fall down) जो 'च्युत' का पर्यायवाची है, दिया है । च्युत की ठीक व्युत्पत्ति सेतुबन्धु के व्याख्याकार ने न० १, ९ में दी है । स० धातु चुक्क्—दशमवर्ग—चुक्कयति ।

४६ छोड, छेड (abuse)=स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य=क्षिप्त, प्रा० छेडेइ या छेडइ, हि० छेडँ या छोडँ (देखिए २७=४२) सम्भवत क्षिप्त से एक धातु 'छिट्' निकलो जैसे स० धातु जुट्, युक्त से व्युत्पन्न हुई। 'छिट्' का प्रेरणार्थक 'छेटि' होगा, जैसे 'जुट' का प्रेणार्थक जोटि हुआ। यहाँ से प्रा० छेडेइ और प्रा० जोडेइ हि० छेडँ—जोडँ हुआ। छिट्' धातु जो जुट् के समान है, हिन्दी में नही मिलती। केवल इसका सयुक्त रूप छिटक् मिलता है। (देखिए—४१) सम्भवत ४३ तथा ४५ भी 'क्षिप्त' से व्युत्पन्न हुए हो। इसी प्रकार के धातु समूह है—छुट्, छूट, छोड। नीचे लिखी रूप-श्रेणियाँ हो सकती है —

१ स० युक्त, प्रा० जुत्त या जुट्ट, धातुएँ स० जुट, प्रा० जुट्ट या जुड, हि० जुट, जुड।

२ क्षिप्त प्रा० छुत्त या छुट्ट, धातुएँ—स० छेट, प्रा० छुट्ट, छुड्, छुट्, हि०, छड। छोड—प्रेरणार्थक।

३ क्षिप्त, प्रा० छित्त या छिट्ट, धातुएँ स० छिट, प्रा० छिट्ट या छिड, हि० छिट, छिड। प्रेरणार्थक—छेड।

(प्राकृत की 'ट्ट' से युक्त धातुएँ सस्कृत भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य से व्युत्पन्न दीखती है। उनका सस्कृत में पुनर्ग्रहण अन्त्य 'ट्' के साथ हुआ। पीछे इन्होने 'ड' से युक्त प्राकृत धातुओ को जन्म दिया। यह साधारण ध्वन्यात्मक परिवर्त्तन के नियम के अनुसार हुआ जिसमे 'ट' का 'ड' हो जाता है। दो प्रा० धातुएँ—'ट्ट' से युक्त तथा 'ड' से युक्त—हिन्दी में आती है। 'छिट्ट' का प्रयोग कम मिलता है। सस्कृत धातुओ के साथ इसका वर्णन नही मिलता। यह हिन्दी मे भी प्राय जीवित नही है। छिटक अवश्य मिलता है।

४७ छान (नामधातु=छिनाना)=स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य छिन्न ('छिद्' धातु से) प्रा० छिन्नेइ या छिन्नइ, हि० छोनँ।

४८ छुट या छूट (नामधातु=be let off, be released)=स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य—क्षिप्त, प्रा० छुत्त (हेमचन्द्र, २,१३८) या छुट्ट (सुम्भचन्द्र, प्राकृत ग्रामर १, ३, १४२, छट्) प्रा० छुट्टेइ या छट्टइ, हि० छुटँ या छूटँ (देखिए—४६ तथा ५०) 'छट' या क्षुट्' धातु का ग्रहण सस्कृत में प्रेरणाथक तथा सकर्मक रूप के अतिरिक्त नही हुआ। सस्कृत में 'छुट्' धातु का अस्तित्व तो है किन्तु इसने एक अलग अर्थ (काटना) ग्रहण कर लिया है। इसी प्रकार का अर्थ-परिवर्तन सस्कृत की एक अन्य धातु-श्रेणी में भी देखा जा सकता है, जिनका मूल भी क्षिप्त में है, क्षिप्त प्रा० में खित्त (हेमचन्द्र, २,१२७) हो जाता है, या खुत्त है (सप्तशतक ५,२७८) या खुट्ट, जहाँ से प्रा० नामधातुएँ खुट्ट, या खुड (हेमचन्द्र ४,११६, खुट्टइ या खुडइ वह तोडता है) निकलती हैं। हिन्दी में 'खूट्' हो जाता है, खुड का कोई अस्तित्व नहीं। ये खुड् तथा इसके प्रेरणार्थक या सकर्मक रूप खोट् या खोड् सस्कृत में ग्रहण कर लिए गए। (देखिए मूलधातु ४१)

६३ झोंक् (नामधातु = झोंकना) = स० सज्ञा-अध्यक्ष, प्रा० अज्झ-क्खइ, हि० झाके (आरभिक 'अ' का लोप होगया, तथा महाप्राणत्व का भी लोप हो गया)

६४ झीक् (सयुक्त धातु आह भरना, खेद करना) स० शीत् + कृ, कर्म वाच्य-शीत्क्रियते (कर्तृवाच्य भाव सहित) प्रा० झिस्केइ या झिक्कइ, हि० झीकै ।

६५ झुक् (सयुक्तधातु) या झोक (Stagger, nod, bend) = स० क्षुभ कर्म० एकवचन० नपुसक लिग क्षुप + कृ प्रा० झुक्कइ, हि० झुकै या झोकै ।

६६ झोक् या झोंक (सयुक्त धातु) = फंकना = स० क्षेप (या क्षप) + कृ प्रा० झैवक्कइ, हि० झोकै या झोंकै ।

६७ टिक् (derivative, = ठहरना be propped = न० ६८ से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक रूप ।

६८ टेक् (सयुक्त धातु—Prop, Support) = स० आय ('श्रै' धातु का) + कृ, प्रा० टायक्कइ, हि० टेकै ?

६९ ठठ् (नाम धातु) fix, arrange = स० भूतकालिक कृदन्त, कर्म-वाच्य-स्तब्ध ('स्तभ' धातु) प्रा० ठ्ठ्डेइ या ठड्ढइ, हि-ठठै 'ढ' का 'ठ' मे परिवर्तित होना सम्भवत आरभिक 'ठ' के कारण है । पुरानी हिन्दी में 'ठठै' थोडा देर ठहरने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है या आश्चर्य चकित या भौंचक्के होने के अर्थ में है । जब भूत कालिक कृदन्त उसी रूप मे प्रयुक्त होता है तब मूल 'ढ' रखा जाता है । इस प्रकार पुरानी हिन्दी में ठाढ तथा आधुनिक में 'ठडा' (खडा हुआ) ।

७० ठठक् (संयुक्त धातु) ठिठक् (थोडी देर ठहरना) स० स्तब्ध + कृ, प्रा० ठठ्ठक्कइ हि० ठठकै या ठिठकै । 'ठठ' की व्युत्पत्ति के लिए ६९ देखिए । 'ख' के स्थान पर 'ड'—देखिए तुलनात्मक व्याकरण—३५ ।

७१ ठनक् (सयुक्तधातु) (एक प्रकार को ध्वनि) = स० स्तन (Sounding) + कृ, प्रा० ठनक्केइ या ठनक्कइ, हि० ठनकै । स० टकार—ट + कृ, ट या ठका तात्पर्य ध्वनि से है ।

७२ ठमक् (सयुक्तधातु-Strut) = स० स्तम्भ + कृ, प्रा० ठम्मक्कइ, ठम्हकइ हि० ठमकै । स० स्तम्भ-प्रा० थभ या ठभ (हेमचन्द्र २,९ हिन्दी थाम् और ठाम । 'म्भ' 'का' म्ह' व 'म' में परिवर्तन देखिए मूल धातुए ११७, ११८ ।

७३ ठसक् (सयुक्त धातु)-Knock, Chip = स० तक्ष + कृ (देखिए परिशिष्ट, सख्या १० में ठाँस्') हिन्दी में एक विस्मयादिबोधक 'ठस्' खटखटाने की ध्वनि के अनुरूप, 'ठसनी' भी है (Grammar)

७४ ठहर् (नाम धातु रहना, धातु सख्या ७५ का एक अन्य रूप है । सम्भवत इस प्रकार हो—ठढ = ठढह = ठहड = ठहरा । या 'र' तत्व उसी प्रकार हो जैसे 'र' या 'ल' ठहर और ठहल में है । हिन्दी में एक सज्ञा 'ठाहर' भी है = स्थान, 'र' 'ल' के सम्बन्ध में तुलनात्मक व्याकरण ३५४,२—ठह—प्रा० ठढ—सस्कृत स्तब्ध ।

७५ ठाढ़् या ठाड् नामधातु (be fixed, be erect या खडा होना) स० भूतकाल

कृदंत कर्मवाच्य स्तब्ध प्रा० ठड्ढ (हेमचन्द्र २ ३९) प्रा० ठड्ढइ या ठड्ढइ हि० ठाढ़ै या ठाढ़ै।

७६ डर् (नामधातु–भय) – सं० संज्ञा—दर, प्रा० डर (हेमचन्द्र ८ २१७ प्रा० डरइ हेमचन्द्र ४ १९८) हि० डरै।

७७ डाह् (नामधातु – गरम होना) – सं० संज्ञा दाह प्रा० डाह (हेमचन्द्र १ २१७) प्रा० डाहइ या डाहइ हि० डाहै।

७८ ढक् (संयुक्तधातु, ढकना) – संस्कृत संज्ञा-स्थग् (कर्म० एकवचन नपुंसक – स्थक्) +कृ प्रा० ढक्कइ (हेमचन्द्र ४ २१) हि० ढकै (देखिए मूलधातु, संख्या १ ३)[11]।

७९ ढल् (derivative) प्रा० ढर (बहना) 'ढाल' या 'ढार' धातु का कर्मवाच्य या अकर्मक। देखिए परिशिष्ट धातु ११।

८० थक या थाक (संयुक्त धातु-थकना) सं० स्तम् (कर्म कारक-एक वचन-नपुंसक० स्तप्) +कृ प्रा० थक्कइ (हेमचन्द्र ४ १७) या प्रवर्ती अर्थ – थक्कइ (हेमचन्द्र ४ ८७ २५९ – यहां यह सं० फक्कति का स्थानापन्न कहा गया है जिसका अर्थ धीरे-धीरे चलना है जो थकावट के कारण हो) हि० थकै थाकै। हेमचन्द्र (४ १६) ने इसधातु को 'स्था' (खड़ा होना) के समान माना है। मराठी में थाक' है जिसका उच्चार 'थक' होता है – रुकना ठहरना। हिन्दी में इसका मूल अर्थ 'ठहर जाना' (Come to stop) है जो थकान के कारण हो। सं० कर्मवाच्य 'स्तभ्यते' (=स्तप्+क्रीयते) का अर्थ है—मजबूत बनाना या कठोर बनाना (be paralysed)। हिन्दी में मूल अर्थ कठोरता सुरक्षित है। ठहरना चाहे थकान के कारण हो अथवा आश्चर्य के कारण हिन्दी का 'थकित्' दोनो अर्थ रखता है इससे व्युत्पन्न अन्य रूप है—थथक, थकावट, थक्का फक्का (Perplexed)[12]।

---

११ यह संस्कृत की मूल धातु ढक् से भी व्युत्पन्न हो सकता है। पहला अर्थ ढक्कति प्रा० ढक्कइ—थक्कइ—ढक्कइ। परिशिष्ट की धातुएं ठोस् ठक ठोस्, ठीक की तुलना करिये। सं० धातु ढक् और 'स्तभ्' —प्राकृत में 'थ' के स्थान पर 'ठ' होजाता है। सं० धातु 'छद'—(chipping off and covering) ऐसा ही अर्थ परिवर्तन हिन्दी धातु मढ़ (ढकना) में जो सं० मृष् (रगड़ना) से व्युत्पन्न है हो गया है।

१२ S Goldschmidt, Prakritica (No. 7 P 5) में इसकी व्युत्पत्ति नामधातु से बताता है—भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य थक्क (धातु, थम) जिसको वह धातु 'स्तम' के समान बताता है और उसके मतानुसार 'ग' 'क' में परिवर्तित हो गया है। इस सिद्धान्त का आधार तीन कल्पनात्मक स्थितियां हैं थम तथा स्तम की समानता थग्ग (भूतकालिक कृदंत-कर्मवाच्य) का अस्तित्व तथा 'ग' का 'क' में परिवर्तित होना पिशेल (Bezzenberger's Beitrage III २३५) इसकी व्युत्पत्ति सं० धातु 'स्थग्' से मानता है।

८१. थपक् (संयुक्तधातु)=सं० थप्+कृ, 'थप्' की व्युत्पत्ति के लिए देखिए, धातु 'थाप्' परिशिष्ट, धातु-संख्या-१३।

८२ थलक् या थरक् (फड़फड़ाना, Tremble) संभवतः 'खरक' का एक भिन्न उच्चारण है या 'फरक' का। 'फ' तथा 'थ' का विनिमय प्रा० फक्कइ तथा थक्कइ में देखा जा सकता है (हेमचन्द्र ४, ८७) 'ख' और 'थ' का विनिमय खभो और थभो में देखा जा सकता है (हेमचन्द्र—२,८) इसका द्वित्व रूप 'थल्थल्' या 'थर् थर' भी है, जो 'खरखर' या 'फर फर' के समान है।

८३ थिरक् (संयुक्तधातु-नाचने आदि में)=सं० स्थिर+कृ, प्रा० थिरक्केइ या थिरक्कइ, हि० थिरकै

८४ थिराव्, (नामधातु=settle as liquor)=सं० संज्ञा-स्थिर, सं० स्थिरायति, प्रा० थिरावेइ या थिरावइ, हि० थिरावै।

८५ थुक् (संयुक्तधातु)=सं० ष्ठेव (या स्थेव)+कृ, प्रा० थुक्केइ, या थुक्कइ, हि० थूकै। 'एव' का संकुचित रूप 'उ', देखिये तुलनात्मक व्याकरण—१२२

८६ दउड या दौड (run-नामधातु)=सं० संज्ञा द्रव, प्रा० दवड, प्रा० 'दवडेइ' या दवडइ, (५०) हि० दउडै, प० हि० दौडै।[13]

८७ दरक् (संयुक्तधातु) (Split)=सं० दर+कृ, प्रा० दरक्केइ या दरक्कइ, हि० दरकै।

८८ दहक (संयुक्तधातु-जलना)=सं० दह्+कृ, प्रा० दहक्केइ या दहक्कइ, हि० दहकै।

८९ दुख् (नामधातु-पीडा)=सं० संज्ञा दुःख, सं० दुःखयति, प्रा० दुक्खेइ या दुक्खइ, हि० दुखै।

९० धडक् (संयुक्तधातु-भावावेश में जलना, दुखी होना, भय से)=सं० दग्ध+कृ, प्रा दड्ढक्कड, हि० धडकै। इसका द्वित्व रूप 'धडधड, भी है।[14]

९१ धार् (नामधातु-उडेलना)=सं० संज्ञा, धार, प्रा० धारेइ या धारइ, हि० धारै।

९२ धौंक या धौक (संयुक्त धातु breathe upon)=सं० धम+कृ प्रा० धमक्केइ या अप० प्रा० धवँक्कइ, हि० धौंकै।

९३ नट् (नामधातु-नाचना)=सं० संज्ञा-नर्त सं० नर्तयति प्रा० नट्टेइ, या, छठवाँ वर्ग, नट्टइ (हेमचन्द्र ४,२३०—२,२३०) हि० नटै। सं० धातु 'नट' (प्रथम वर्ग नटति या दशम् वर्ग-नाटयति) सम्भवतः प्राकृत से ली गई है।

---

१३ 'चन्ड के 'प्राकृत-लक्षण' (C D 11, 27 b) में एक धातु, 'डव डव' की ओर इंगित किया गया है जिसका अर्थ है मुंह नीचा किये दौडना। मराठी में 'डव डव' तथा 'डवड' दोनो इसी अर्थ में प्रयुक्त होते है। इसमें दवड भी है। ये दोनो धातुएँ एक ही है। आरम्भिक 'द' का 'ड' में वदल जाना अनहोनी वात नहीं है (हेमचन्द्र, १,२१७)

१४. हिन्दी में 'धड' (body) तथा प्रवल ध्वनि के लिए, भी आता है। यह सं० दृढ़ से निकला होगा। प्रा० दढ=हि० धड

९४ नह् (derivative)—संस्कृत 'नह्' (मूलधातु, संख्या ११६) का कर्म वाच्य या अकर्मक रूप है। जिसकी व्युत्पत्ति नह् से हुई है।

९५ नहाट (नामधातु भागना)—सं० भूत कालिक कृदन्त कर्मवाच्य न्यस्त (न्यस् धातु) प्रा० नट्ठइ पु हि नहाटै।

९६ निकस (derivative) या निकर—धातु 'निकास' (संख्या ९८) से व्युत्पन्न-कर्मवाच्य या अकर्मक।

९७ निकस् (derivative-be expelled)—मूल धातु 'निकास्' (संख्या—११९) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक रूप।

९८ निकाल (नामधातु) या निकार्—सं भूत कालिक कृदन्त कर्मवाच्य निष्कृष्ट, पालि तथा प्रा निक्कड्ढ प्रा निक्कड्ढइ या निक्कामइ प हि निकालै या पु हि निकारै[15]।

९९ निखोड (नामधातु) या निखोर (Peel)—सं भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-निष्कुट प्रा निक्कोडइ) 'ड' के स्थान पर 'र' हो गया—हेमचन्द्र ११६) या निक्खोडइ।

१०० निकोस् (नामधातु—grim) सं संज्ञा-निकुस्मय (धातु—नि+कु+स्मि से) सं निकुस्मयते प्रा निक्कोस्सेइ या निक्कोस्सइ (हेमचन्द्र १ ११६) हि निकोसै।

१०१ निगल् (नामधातु—निगलना) सं संज्ञा-निगल्, प्रा निगलेइ या छठवाँ वर्ग-निगलइ, हि निगलै (यह अत्यन्त प्राचीन धातु हो सकती है—सं नि+गृ छठवाँ वर्ग निगिलति। 'इ' का 'अ' में परिवर्तन हो गया है।

१०२ निपट (नामधातु समाप्त होना)—सं संज्ञा-निष्पत्ति (धातु—'निस्+पद्' से) प्रा निप्पट्टेइ या छठवाँ वर्ग-निप्पट्टइ हि निपटै। (१)[16]।

१०३ निबह् (derivative) या निभ-मूलधातु-निबाह् (संख्या १४६) से व्युत्पन्न।

१०४ पइठ (पैठ)—नामधातु (प्रविष्ट होना)—सं भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-प्रविष्ट, प्रा पइट्ठ (हेमचन्द्र ४ १४) प्रा पइट्ठइ या छठवाँ वर्ग पइट्ठइ, हि पइठै, पैठै।

१०५ पक (नामधातु—पकना)—सं भूत कालिक कृदन्त कर्मवाच्य-पक्व प्रा पक्क (हेमचन्द्र २ ७९) प्रा पक्केइ या पक्कइ, हि पकै।

१०६ पकड (नामधातु—पकड़ना)—सं भूत कालिक कृदन्त कर्मवाच्य प्रकृष्ट प्रा पक्कड्डइ (हेमचन्द्र ४ १८७) हि पकड़ै।

१०७ पछताव् (नामधातु—पश्चाताप करना)—सं संज्ञा पश्चाताप प्रा पच्छत्तावेइ या छठवाँ वर्ग—पच्छत्तावइ, हि पछतावै।

१०८ पट् (नामधातु—भरा हो जाना या पाटना सींचना)—सं संज्ञा-पट पा-पट्ट या

---

[15] 'क' या 'ह' में परिवर्तन-देखिये तुलनात्मक व्याकरण—११५ संस्कृत धातु निस्+क्रम् स निष्क्रामयति—प्रा निक्कामेइ।

[16] स्वयं 'त' का मूर्धन्य 'ट' हो गया है। प्राकृत पट्टणो संस्कृत के पत्तन से व्युत्पन्न हुआ है (वररुचि ३ २१ या प्रकृत प्राकृत पठित वररुचि ३ २१)

पट, प्रा० पट्टेइ या (छठवाँ वर्ग) पट्टइ, हि० पटै। स० मे पत्र का अर्थ है सिंचाई का पात्र, पट्ट का अर्थ है वहीखाता जिसमें अदायगी का हिसाब लिखा जाता है, पट का अर्थ है—छत।

१०९ पनप् (नामधातु—बढ़ना) = स० सज्ञा प्रपञ्च (धातु प्र + पच) स० प्रपचयति, प्रा० पपणेइ या पपणइ (हेमचन्द्र २,४२) हि० पनपै (पपनै का रूप) तु० व्याकरण—१३३।

११० पनियाव् (नामधातु—सीचना) = स० सज्ञा पानीय, प्रा० पाणिअ' (हेमचन्द्र १,१०१) प्रा० पणियावेइ या पणियावइ, हि० पनियावै।

१११ परिस् या परस् (नामधातु—छूना) = स० सज्ञा-स्पर्श, प्रा० फरिस (वररुचि ३,६२) प्रा० फरिसइ (हेमचन्द्र, ४,१८२) हि० परिसै या परसै (महा प्राणत्व का लोप हो गया, 'इ' के स्थान पर अ आ गया)।

११२ पलट् (नामधातु = उलटना) या पलथ् = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-पर्यस्त, प्रा० पल्लट्ट या पल्लत्थ (वररुचि ३,२१, हेमचन्द्र २,४७) प्रा० पल्लट्टइ या पल्लत्थइ (हेमचन्द्र ४,२००) हि० पलटै या पलथै। (हेमचन्द्र ४,२००/२८५ पल्हत्थ और पल्हत्थड २—तु० व्याकरण—१६१)

११३ पहिचान् या पहचान् (नामधातु = पहचानना) = स० सज्ञा-परिचयन्, प्रा० परिच-अणेइ या परिचअणइ, हि० पहिचानै या पहचानै। 'र' के स्थान पर 'ह' के लिये देखिये तुलनात्मक व्याकरण ६६, १२४।

११४ पिहन् या पहिन् (derivative) मूलधातु 'पिहनाव' या 'पहिनाव (सख्या-१६५-१६६) का कर्मवाच्य या अकर्मक [17]।

११५ पिचक् (सयुक्तधातु—पिचकना) = स० पिच्च + कृ, प्रा० पिच्चक्केइ या पिच्चक्कइ, हि० पिचकै। पिच्च या 'पिच्' की व्युत्पत्ति के लिए देखिए, मूलधातु 'पीच' (सख्या १७५) सस्कृत में यह शब्द प्रा० से गृहीत हुआ है [18]।

११६ पिछल् या फिसल (नामधातु—फिसलना) = स० सज्ञा-पिच्छिल या पिच्छल (slippery), प्रा० पिच्छलेइ या पिच्छलइ हि० पिछलै या फिसलै (महाप्राणत्व 'प' में आगया। छ का स हो गया। देखो तुलनात्मक व्याकरण ११।

११७ पिट् (derivative—पीटना) धातु पीट (सख्या—११९) का कर्मवाच्य या अकर्मक।

११८ पिल् (derivative—पीटना आदि) धातु 'पेल्' (सख्या—१२१) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

११९ पीट (नामधातु) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्म वाच्य—पिष्ट, प्रा० पिट्टेइ (सप्तशतक

---

१७ बंगला में धातु 'पिनध' है जो स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य (पिनद्ध) की नामधातु है। हिन्दी धातु की भी इसी प्रकार व्याख्या हो सकती है जिसमें 'ध' का 'ह' हो गया है।

१८ स० में 'चिपिट' शब्द 'प' और च' के विपर्यय से परिवर्तित हुआ दीखता है।

१३४. विनट् (नामधातु—खराब होना) सम्भवत स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य विलम्बित (विलप्त) से सवधित ।

१३५ वोट् (नामधातु—बिखेरना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-व्यस्त, प्रा० विट्ट (विट्ठ) प्रा० विट्टेइ या विट्टइ हि० वोटे ।

१३६ वीत् (नाम धातु—समाप्त होना) स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य वीत, प्रा० वित्त प्रा० वित्तेइ या वित्तइ, हि० वीते । (संस्कृत निहित के स्थान पर प्रा० निहित्त (हेमचन्द्र २९९) ।

१३७ वेढ् (नामधातु—घेरना) = स० वेष्ट, प्रेरणार्थक वेष्टयति या प्रथमवर्ग-वेष्टते, प्रा० वेंढेइ (हेमचन्द्र ४,५१) या वेढइ (हेमचन्द्र ४,२२१) हि० वेढे ।

१३८ बउरान् या बौराव् (नाम धातु—पागल होना) = स० सज्ञा वातुल, प्रा० वाउलावेइ या वाउलावइ, हि बउलावे या बौरावे । देखिये तुलनात्मक व्याकरण २५ ।

१३९ भाग् (नामधातु—भागना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-भग्न प्रा० भग्ग (हेमचन्द्र ४,३५४) प्रा० भग्गेइ या भग्गइ हि० भागे ।

१४० भींग या भोग (नामधातु—भीगना) = स० अभ्यग, प्रा० अभिगेइ, अब्भिगइ, हि० भींगे या भीगे (?) मूलधातु भीज (परिशिष्ट सख्या २१) से मिलाइए ।

१४१ भुन (derivative—भुनना) धातु 'भून' (सख्या—१४३) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१४२ भूल् (नामधातु) भोल या भोर (भूलना, गलती करना) स० भूत कालिक कृदन्त कर्मवाच्य—भ्रष्ट, प्रा० भूल्लइ (हेमचन्द्र ४, १७७) प० हिन्दी—भूलै या भोलै, पू० हि० भूरै या भोरै, स० भ्रष्ट = प्रा० भ्रड्ढ = भ्रल्ह[२१] = भुल्ल ।

१४३ भून् (नामधातु) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य भूर्ण (Pan ८ २ ४४) प्रा० भुणेइ या भुणइ, हि० भूनै ।

१४४ मढ् (नामधातु—मढना, ढकना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य मृष्ट, प्रा० मड्ढ या मड्ड, प्रा० मड्डइ या मढ़इ (हेमचन्द्र ४, १२६) हि० मढै । स० धातु 'मठ' (ढकना) आदि प्राकृत या पालि मट्ठ (= मृष्ठ) से गृहीत है, जहाँ से 'मठ' आया, किन्तु हि० में मढ़ या मढा है । इसी प्रकार कढ्, वेढ़् धातु से भी ।

१४५ मत् (नाम धातु—परामर्श करना) = स० सज्ञा-मन्त्र, प्रा० मतेइया मतइ (हेमचन्द्र ४, २६० मतियो) हि० मतै ।

१४६ मिट् (derivative—be effaced) धातु 'मेट' (१५३) का कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१४७ मुड् (derivative)—मूँडना—मूलधातु मूँड (२८४) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१४८ मुद (derivative) वन्द होना—धातु 'मूँद' (१५१) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

---

२१ भोल् या भोर से पूर्व मैं इसको सस्कृत नाम धातु भ्रमर से हिन्दी में 'भोरा' या 'भोला' मानता था ।

१४९ मू (नामधातु—मरना)—सं भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य—मृत प्रा मुम (हेमचन्द्र ४४२) प्रा मुमइ, हि मुऐ।

१५ मूत् (नामधातु—पेशाब करना)—सं संज्ञा-मूत्र सं० मूत्रयति प्रा मत्तेइ या मुत्तइ, हि मूतै।

१५१ मूद (नामधातु—बन्द करना)—स संज्ञा-मुद्रा सं मुद्रयति प्रा मद्देइ या मुद्दइ हि मूँदै। (हेमचन्द्र ४ ४ १ विणीमुद्द—(sealed)

१५२ मून (नाम धातु—चुप रहना)—स भूतकालिक कदन्त कर्मवाच्य मून् ('मू' धातु से) प्रा मूणेइ या मूणइ हि मून (अथवा 'मौन' संज्ञा से)

१५३ मेट् (नामधातु—मिटाना)—सं भूतकालिक कदन्त कर्म वाच्य मृष्ट, प्रा० मिट्टेइ या मिट्टइ (मिट्टइ) हि मेटै। पाली मट्ठ मट्ठ—मृष्ट।

१५४ मीस् या मीर (नामधातु—घिसना)—स संज्ञा—मीस इससे मीसयति प्रा मोसेइ या मोसइ, प हि मीसै पू हि मीरै।

१५५ मौलाव या मौराव (नामधातु—blossom)—सं मौल प्रा मोल्लावेइ या मोल्लावइ, प हि मौलावै पू हि मौरावै।

१५६ रम् (नामधातु—be attached) सं भूतकालिक कदन्त कर्मवाच्य रक्त प्रा रग्ग (हेमचन्द्र २, १) प्रा रग्गेइ, हि रगै।

१५७ रच् (नाम धातु—रचना)—सं संज्ञा-रच सं रचयति प्रा० रचेइ या रचइ हि रचै।

१५८. रुक (नाम धातु—रुकना) धातु 'रोक' (१६२) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

१५९ रच् या रूच् रुच् (२६०) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

१६ रूठ् या रुस (रुष्ट होना) सं भूतकालिक कदन्त कर्म वाच्य रुष्ट प्रा रुट्ठ (हेमचन्द्र ४ ४१४) या रुसइ प्रा रुट्ठइ या रूसइ, हि रूठै या रुसै।

१६१ रेंक (संयुक्त धातु—रेंकना)—स रेप् (कर्म एक वचन नपुंसक रेट्)+कृ प्रा रेक्केइया रेक्कइ, हि रेंकै।

१६२ रोक् (संयुक्त धातु—बाधा डालना)—स रुध् कर्म एक वचन नपुंसक-रुद्+कृ प्रा रुक्केइ या रुक्कइ हि रोकै।

१६३ रोप् (derivative—जमाना) मूलधातु रुप् (२६५) से व्युत्पन्न सकर्मक या कर्तृ वाच्य।

१६४ लघक (नाम धातु)—स संज्ञा—लघ प्रा (diminutive) लघक प्रा लघक्केइ या लघकइ, हि लघकै।

१६५ लव् या लौ (नाम धातु—reap)—स संज्ञा—लव स लवयति प्रा लवेइ या लवइ हि लवै या लौऐ।

१६६ लुक (छिपना—संयुक्त धातु)—स लुप्+क प्रा लुक्कइ (हेमचन्द्र ४ ५५) हि लुकै। 'लुप्' का अर्थ है 'बाहर हो जाना या लोप हो जाना। इसकी व्युत्पत्ति स धातु लुप् (तोड़ना) से हुई है। यह मूल अर्थ प्राकृत के 'लुक्कइ' में अब भी सुरक्षित है जिसका अर्थ तोड़ना काटना (हेमचन्द्र ४ ११६, जहाँ यह

स० तुड् के समान बताया गया है) तथा अतर्धान होना अथवा अपने को छुपाना है (हेमचन्द्र ४, ५६) जहाँ यह स० 'निली' के समान बताया गया है ?[२२]

१६७ लुभाव् या लुहाव् (लुभाना) स० सज्ञा-लोभ, प्रा० लोभावइ या लोहावइ, हि० लुभावै या लुहावै ।

१६८ सज् (derivative--सजना-सजाना) 'धातु' 'साज' (परिशिष्ट सख्या-२४) का कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१६९ सटक् (सयुक्त) या सडक (get away)=स० सत्र या सद्+कृ प्रा० सट्टक्कइ या सडक्कइ, हि० सटकै या सडकै । 'सत्र' का अर्थ है ढकना, छिपावट् । धातु 'सद्' प्रा० 'सड' हो जाता है (वररुचि ८,५१, हेमचन्द्र, ४,२१९)

१७० सध् (derivative—सधना) मूल धातु 'साध्' (३३९) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१७१. समुहाव (नामधातु) =स० सज्ञा-समुख, प्रा० समुहावेइ या समुहावइ, हि० समुहाव ।

१७२ सरक् (सयुक्त धातु=खिसकना) स० सर्+कृ, प्रा० सरक्केइ, या सरक्कइ, हि० सरकै । सम्भवत यह 'सडक' धातु का ही एक रूपान्तर हो ।

१७३, सराप् (नामधातु—शाप देना) =स० शाप का अपभ्रष्ट रूप ।

१७४ साठ, या साँठ् या साँट् (derivative—जोडना् मिलाना) मूलधातु सठ (३२३) से व्युत्पन्न सकर्मक या कर्तृवाच्य ।

१७५ सील् (नामधातु—सीलना) =स० सज्ञा-शीतल, प्रा० सीअलेइ, या सीअलइ, हि० सीलै ।

१७६ सुधर् (derivative—सुधरना) धातु 'सुधार' (३४६) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१७७ सुहाव् (नामधातु) =स० सज्ञा सुख, प्रा० सुहावेइ या सुहावइ, हि० सुहावै ।

१७८ सुहाव (नामधातु—सुन्दर होना) =स० सज्ञा सोभ, स० शोभयति, प्रा० सोहावेइ या सोहावइ, हि० सुहावै । यह मूलधातु भी हो सकती है जिसकी व्युत्पत्ति 'शुभ' धातु के प्रेरणार्थक से हुई है ।

१७९ सूख या सुख् (नामधातु—सूखना) =स० सज्ञा-शुष्क, प्रा० सुक्खेइ या सुक्खइ, हि० सूखै ।

१८० सूत् (नामधातु—सोना) =स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-सुप्त, प्रा० सुत्तेइ या सुत्तइ, हि० सूतै ।

१८१ सैंत् या सेंत् (नामधातु—adjust) =स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य समाहित, प्रा० समाहित्त (हेमचन्द्र २,९९-निहित्त=स० निहित) अप० सआँहित्त या सआँइत्त, हि० (सकुचित) सैंत, जहाँ से प्रा० समाहित्तइ, हि० सैंतै या सेंतै ।

१८२ हग् (सयुक्तधातु) =स० हद्+कृ, प्रा० हग्गइ, हि० हगै ।

---

२२ 'लुक्' धातु 'लुच्+कृ' से भी सबधित हो सकती है । 'लुच्' 'लु च' धातु से है जिसका अर्थ (लुक् के समान) काटना या अतर्धान होना है । अथवा इसकी व्युत्पत्ति लु ब+कृ से हो सकती है । धातु 'लु ब' का अर्थ है अदृश्य होना ।

१८३ हुकाव या हुकाव (संयुक्त धातु—हाँकना) —सं हुक+कृ प्रा हुक्कावइ या हुक्कावइ, हि हुकावै या हुँकावै ।

१८४ हुकार (नामधातु—दूर करना आवाज करते हुए) —स हुक्कार, सं हुक्कारयति प्रा हुक्कारेइ या हुक्कारइ हि हुंकारै ।

१८५ हुत (मारना) सं भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-हुत प्रा॰ हुत (हेमचन्द्र २,९९) प्रा हुत्तेइ या हुत्तइ, हि हुतैं ।

१८६ हुनक (संयुक्त धातु—चलना) स हु+कृ प्रा हुनक्केइ या हुनक्कइ हि हुनकै ।

१८७ हौंक (संयुक्त धातु)—सं हुक+कृ प्रा हुक्केइ या हुक्कइ (हेमचन्द्र ४ १९४) हि हौंकै । देखिये १८३ १८४ ।

१८८ हार् (नामधातु—पीछा पीटनाना)—स सज्ञा हार, प्रा हारेइ या हारइ हि हारै (हेमचन्द्र ४ ३१ में हारवइ है) हाराअइ (हेमचन्द्र १ १६) यहाँ यह 'नश्यति' कहा गया है । यह केवल 'हारै' का Pleonastic रूप है, हि में हरावै या हिरावै ।

१८९ हौंक (संयुक्तधातु—blow) स धम+कृ प्रा धमक्केइ या धमक्कइ, अप धमेक्कइ हि हौंकै (धौंकै के स्थान पर) देखिए-धातु ९२ ।

परिशिष्ट १—मूल धातुएं

१ ऐंच या ऐंच (खीचना) सं आ+कृष भविष्य-आकर्क्षति (वर्तमान के भाव में प्रयुक्त) प्रा आयक्खइ या आइंखइ (हेमचन्द्र ४ १८७) हि ऐंचै या ऐंचै (यहां प्राकृत का लोप) यह धातु और यह रूप 'अंच' का प्रयोग दोनों प्रा (हेमचन्द्र ४ १८७ मथइ) तथा पुरानी हिन्दी (पृथ्वीराज रासो २७ १८ धर्चै) में हुआ है । देखिए २

२ खीच या खेच या खीँच या खेंच —स कृष् भविष्य कक्ष्यति (वर्तमान के भाव में प्रयुक्त) प्रा कच्छइ या कंछइ हि खीचै या खेचै या खीँचै खेंचै (यहां प्राकृत का विपर्यय) पुरानी हिन्दी में यह धातु 'खच' के रूप मे प्रयुक्त मिलती है जो प्राकृत के 'कच्छ' के अधिक समीप है । इसके मिलती जुलती धातु 'मच' भी पुरानी हिन्दी में है, जो मूल 'ऐंच' का सुधरा हुआ रूप है जो 'खच' के अनुकरण पर बना होगा । खंच का भी खैंच हो गया । इसी प्रकार अच का ऐंच हो गया । इस प्रकार पृथ्वीराज रासो (२७ १८) में खचै और घंचै है ।[२१]

३ छांड (Vomit, let go release) स छूर्द प्रवसर्ग छर्दति प्रा छड्डइ (हेमचन्द्र ४ ९१) हि छाड़ै इस धातु का रूप 'छाँटे' भी है । इसकी व्युत्पत्ति स छर्द से हो सकती है सातवाँ वर्ग-मूलति प्रा छंडइ या छटइ हि छाड़ै या

---

२१ या संजोग सकरी चीय दकी वर धर्चै ।
चौदेयी सम्मान धाय धरि भाग सुखंचै ।

छांटे। इसकी व्युत्पन्ति स० नाम धातु 'छर्द' से भी दिखाई जा सकती है, दशम वर्ग छर्दयति (ऐसा हेमचन्द्र २,३६ में दीखता है) (छर्दि से छड्डइ)।

४ छप् (दवाना, छापना) = स० क्षप, प्रथम वर्ग-क्षम्पति, प्रा० छपइ, हि० छपे। अथवा यह सम्भवत क्षम् मे है, चतुर्थ वर्ग क्षाम्यति।[२४]

५. झख् या झख् या झक् (आह भरना, Chatter) स० ध्वांक्ष्, प्रथम वर्ग ध्वांक्षति, प्रा० झखइ (हेमचन्द्र ४,१४०) हि० झखे, झखे, या झके। ध्व का झ में परिवर्तन यहाँ स० ध्वज प्रा० झज्यो हेमचन्द्र २,२७।[२५]

६ झाप् (फेंकना या ढकना) = स० क्षप्, कर्मवाच्य क्षप्यते (कर्तृ वाच्य के भाव में प्रयुक्त) प्रा० झपइ, हि० झांपे,[२६] अथवा इसको व्युपत्ति स० अधि + ऋ से हो सकती है, प्रेरणार्थक अध्यर्पयति, प्रा० झपेइ या झपइ, हि० झापे।

७ ठक् (खट खटाना) = स० तक्ष्, प्रथम वर्ग तक्षति, प्रा० टक्खइ (त् के स्थान पर ट) हि० ठके। देखिए-९। स० टक्कर से मिलाओ हेमचन्द्र १,२०५

८ ठास् (raw, hammer) स० तक्ष्, प्रथम वर्ग, तक्षति, प्रा० टच्छइ, हि० ठांसे (देखिए-१०,७,९ भी)[२७]

९ ठोक् या ठोंक = स० त्वक्ष, प्रथम वर्ग-त्वक्षति, प्रा० टुक्खइ, हि० ठोके[२८]

१० ठोम् या ठोस (hammer) = स० त्वक्ष, प्रथम वर्ग-त्वक्षति, प्रा० टुच्छइ (हेमचन्द्र १,२०५) हि० ठोसे या ठासे (देखिए ८)

११ ढाल् या दार् (उडेलना) 'धाड' का रूपान्तर (देखिए—१४)

१२. थप् (fix, settle) = स० स्तभ्, कर्म वाच्य-स्तम्यते (कर्तृ वाच्य के भाव में) प्रा० थप्पइ, हि० थपे। म्य = व्य = व्व = प्य

---

२४ धातु 'स्पृश्' से भी प्रा० कर्मवाच्य (कर्तृ वाच्य-भाव सहित) निकल सकता है, छप्पइ (छिप्पइ से मिलता हुआ) (हेमचन्द्र ४,२५७)

२५ हेमचन्द्र ने इस क्रिया का कई वार उल्लेख किया है।

४,१४० = सतप् (Repent)
४,१४८ = विलप् (hament)
४,१५६ = उपालभ् (scold)
४,२०१ = नि श्वस (sigh)
४,२५६ = भाष् (Talk)

२६ 'द' के स्थान पर' झ स० क्षीयते प्रा० झिज्जइ (हेमचन्द्र २, ३ और अनुस्वार का अश जपइ (हेमचन्द्र ४, २/१,२६ जप्पइ के स्थान पर)

२७ (अ) 'त' के स्थान पर 'ट' देखो हेमचन्द्र १,२०५
(व) टांछे से ठासे—'छ से 'ट' व 'छ' से 'स' देखो
तुलनात्मक व्याकरण ११, १३२

२८ 'त' के स्थान पर 'ट' हेमचन्द्र १,२०५

पर्याय सूची

१. Causal—प्रेरणार्थक
२ Conjugation—समुच्चय बोधक
३ Contraction,—संकोच
४. Elision—लोप
५. Participles—कृदन्त
   Past P. —भूत कालिक कृदन्त
   Present P —वर्तमान कालिक कृदन्त
६ Phonetic permutation—ध्वनि व्यतिहार
७ Roots—धातुएं
   Compound R मिश्रित धातुएं
   denominative R नाम धातु
   derivative R व्युत्पन्न धातु
   Primary R अयौगिक धातु
   Secondary R यौगिक धातु
८ Substantive—सत्व वाची
९ Suffix—प्रत्यय
   Class S वर्गीय प्रत्यय
   Passive S कर्म वाच्य प्रत्यय
   Phonetic S ध्वन्यात्मक प्रत्यय
१० Voice—वाच्य
   Change of—वाच्य परिवर्तन

परिशिष्ट २

धातु ३६—प्राकृत में कर्मवाच्य 'खाद्यते' भी प्रयुक्त होता है। जो कर्तृवाच्य सा प्रतीत होता है जैसे खज्जति "वे खाते" Delius Radices Pracritice पृष्ठ ५४, मृच्छकटिक से उद्धृत, डा० राजेन्द्रलाल मित्रा पृष्ठ ८७ में 'खज्जदि' अपनी प्राकृत शब्दावली में देते हैं।

धातु ४०—धातुएं खुल्, खोल्, खूट सब एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और संस्कृत धातुएं क्षोट्, खोट्, खोड्, खोर्, खोल्, खुण्ड्, खुड्, खुर्, क्षुर जिन सब का अर्थ (१) Limp (लंग्) (२) Divide or break (विभाजित करना या तोडना)। मूल रूप 'क्षोट्' या 'क्षर्' या 'क्षुट्' प्रतीत होता है।

धातु ६५—उत् + शद् (ऊपर की ओर गिरना) संस्कृत में असाधारण शब्द है लेकिन इसका समास रूप 'उन् + पत्' के समान बन गया है। 'शद्' का अन्तिम 'द्' प्राकृत में 'ड्' हो जाता है—हेमचन्द्र ४,१३० झडइ और वररुचि ८,५१, हेमचन्द्र ४,२१९ सडइ। प्रारम्भिक 'ड' का लोप हो गया और 'छ' का महाप्राणत्व 'ह्' पर परिवर्तित हो गया है या लुप्त हो गया है जैसे धातु 'चाह' (इच्छा)—उच्छाह = उत् +

अवयज्झइ में जो अवयच्छइ का समान रूप प्रतीत होता है मृदु हो गया है। इस प्रकार हम इसके सकुचित रूप पयच्छइ = स० प्रद्रक्ष्यति (प्र—दृश्) को देखें। सस्कृत (classical) में दृश् का भविष्यत रूप में अर (पाणिनि VI, १,५८) के स्थान पर 'र' चलता है लेकिन बोलचाल मे दोनो ही रूप द्रक्ष्यति और द्रक्ष्यति काम में आते हैं। इन दोनो रूपो में से बाद के रूप से ही प्राकृत के रूप व्युत्पन्न हुए हैं जैसे अवअक्खइ = अवदक्खइ (अवदक्खइ) = अवदर्क्ष्यति। निअच्छइ का दूसरा रूप निअक्खइ होगा यह णिअक्कइ का रूप प्रतीत होता है—वररुचि, ८,६६ (क्ख के स्थान पर क्क) प्राकृत पासइ सस्कृत पश्यति से व्युत्पन्न हुआ है या पासइ (हेमचन्द्र १,४३) प्राकृत अवआसइ स० अवपश्यति। मराठी में प्राकृत धातु पास्—'पाह्' हो जाती है। प्रा० पुलोएइ स० प्रविलोकयति से है। अवि का सकुचित रूप उ हो गया (देखो तुलनात्मक व्याकरण १२२) प्रा० पुलएइ सम्भवत उसी का भ्रष्ट रूप है। हिन्दी में इनका कोई रूप प्रचलित नही है।

धातु १५८—पलाइ का अशुद्ध रूप सम्भवत पलाउ है।

धातु २३८—धातु क्षै—प्राकृत झाअइ और इसका सकुचित रूप है 'झाइ' ठाअइ की समरूपता के आधार पर ठाइ—स्था से, ध्यै से झाअइ या झाइ है (वररुचि ८,२६) पालि में झायति और प्राकृत विज्झाइ (देखो हेमचन्द्र २,२८ = स० वि—क्षायति)। पर समास में प्राकृत रूप झेइ या झइ हो सकता है जैसे उट्ठेइ या उट्ठइ मे ठेइ या ठइ है—उत् + स्था (हेमचन्द्र ४,१७) इस प्रकार वोज्झेइ या वुज्झेइ, वुज्झइ है।

धातु २५०—'इसका सम्बन्ध सस्कृत धातु वद् से है' ऐसा प्राकृत वैयाकरणो ने लिखा है (Coldwell पृष्ठ ६६ जहाँ वोच्चइ या वोचइ धातु 'वच्' से मानी है)। बाद का रूप कर्मवाच्य वुच्यते (उच्यते) से कर्तृवाच्य के भाव में व्युत्पन्न है जैसा हेमचन्द्र ४,१६१ से प्रतीत होता है। इसी प्रकार कर्मवाच्य बूर्यते से ('बू' धातु) बोल्लइ बनाया गया है। सन्ध्यक्षर र्य—ल्ल बन गया जैसे पल्लाण पर्याण सोअमल्ल = सौकुमार्य (वररुचि ३,२१)

धातु २६०—इसका निर्देश स० धातु रह् की ओर भी किया जा सकता है। इसका अर्थ रेगिस्तान है। रक्ष् की व्युत्पत्ति मराठी राह् = राख् से प्रतीत होती है। ख् का ह् में परिवर्तन—देखो तुल० का० ११६।

धातु ३०१—स० धातु—रुट्, रुड्, रोड्, रौड् लुट्, लुड्, लुल, लोड्।

धातु ३३७—इस धातु का अर्थ घिसना भी है। सारइ का उल्लेख हेमचन्द्र ने ४,८४ में किया है जो प्रहरति का पर्यायवाची है।

धातु ३५०—'घ्रा' का ग्घेइ या ग्घइ प्राकृत में जैसे ट्ठेइ या ट्ठइ (स्था) सम का सकुचित रूप सूँ हिन्दी में है जैसे सैं, पैं प्राकृत समप्पइ—देखो ३५७। सवग्घइ इसका मध्य रूप (हेमचन्द्र ४,३६७)। धातु 'शिघ्' धातु मे व्युत्पन्न हुई है प्रथम वर्ग सिंघति प्रा० सिंघइ—हिन्दी में सींघैं होना चाहिए। (ई का ऊ में परिवर्तन हो गया)।

२९८	√रिग्	१/२९९
२९९	√रिप्	१/२९३
३००	√रुच्	१/२९४
३०१	√रुट्	१/३०१
३०२	√रुड्	१/३०१
३०३	√रुद्	१/३००
३०४	√रुध्	१/२९८
३०५	नाम रुध	२/१६२
३०६	√रुष्	१/२९६
३०७	√रुष्ट	२/१६०
३०८	√रुह्	१/२९५
३०९	√रेष्	२/१६१
३१०	√रौद्	१/२९७
३११	√रौंद्	१/२९७
	ल	
३१२	√लक्ष्	१/३०३
३१३	√लग्	१/३०४
३१४	√नाम लग	२/१६४
३१५.	√लघ्	१/३०५
३१६	√लज्ज्	१/३०९
३१७	√लड्	१/३०६
३१८	√लप् वि	३/५
३१९	√लभ्	१/३०८
३२०	नाम लव	२/१६५
३२१	√लस्	१/३०७
३२२	√लिख्	१/३१०
३२३	√लिप्	१/३११
३२४	√लि नि०	२/१६६
३२५	√लु च्	२/१६६
३२६	√लुट्	१/३१७
३२७	√लु ट्	१/३१८
३२८	√लु ठ्	१/३१८
३२९	√लुड्	१/३१३
३३०	√लुप्	२/१६६
३३१	नाम लुप	२/१६६
३३२	√लुम्ब	२/१६६
३३३	√लुभ	१/३१८

३३४.	√लुल	१/३०१
३३५.	√लोक प्रविलोकयति	१/२८
३३६.	√लोड्	१/३०१
३३७	नाम लोभ	२/१६७
	व	
३३८.	√वच्	१/२५०
३३९	√वच्	१/१९९
३४०	√वट्	१/२०२
३४१.	√वड् निर —	१/१४८
३४२	√वन्	१/२०७
३४३	√वद्	१/२००
३४४	√वप्	१/२४६
३४५	नाम वम	२/३
३४६.	√वस्	१/२११
३४७.	√वह्	१/२१२
३४८.	नाम वहिस	२१३१
३४९	नाम वाच	२/१३९
३५०	नाम वाच्य	२/१३०
३५१	√वाछ	१/२१४
३५२	नाम वतुल	२/१३८
३५३.	√वास्	१/२१७
३५४	नाम विराव	२/१३३
३५५	क्र० विलम्बिन	२/१३४
३५६	√विष्	२/१३७
३५७.	√विश्	२/१३७
३५८.	क्र० वीत	२/१३६
३५९	√वृ०	१/२०८ ३/१७
३६०	√वृत	१/२०५
३६१	√वृध्	१/२०४
३६२	√वृष्	१/२०९
३६३	√वे	३/१७
३६४	√वेष्ट्	२/१३७
३६५	√व्यच्	१/२४३
३६६	√व्यध्	१/२३५
३६७	क्र० व्यस्त	२/१३५

४३७	√स्फट्	१/१८६
४३८	नाम स्फट	२/१२३
४३९	नाम स्फर	२/१२४
४४०	√स्फल्	१/१९१
४४१	√स्फिट्	१/१९६
४४२	√स्फिट्ट्	१/१९२
४४३	√स्फुट्	१/१९८
४४४	नाम स्फूत्कार	२/१२०
४४५	√स्मि—नि+कु+स्मि	२/१००
४४६	√स्मृ	१/३४८
		३५३
४४७	√स्यन्द्	२/३८
४४८	नाम स्यन्न	२/३८
४४९	√स्रम्	१/३३९
४५०	√स्विद्	१/३४३
	√प्र०	१/१६३

ह

४५१.	नाम हक	२/१८३
४५२	नाम हक्कार	२/१८४
४५३	कृ० हत	२/१८५
४५४	नाम हद्	२/१८२
४५५	√हन्	१/३५८
४५६	√हस	१/३६३
४५७.	√हा	१/२३३
४५८	नाम हार	२/१८८
४५९	√हु	१/३६७
४६०	√हूड्	१/३६८
४६१	√हृ	१/३५९
	वि	१/३३२
४६२	√हृष्	१/३६०
४६३.	√ह्वल्	१/३६१
४६४	नाम ह्वल	२/१८६
४६५	√ह्व	१/३६६
४६६	√ह्वे	१/३६२